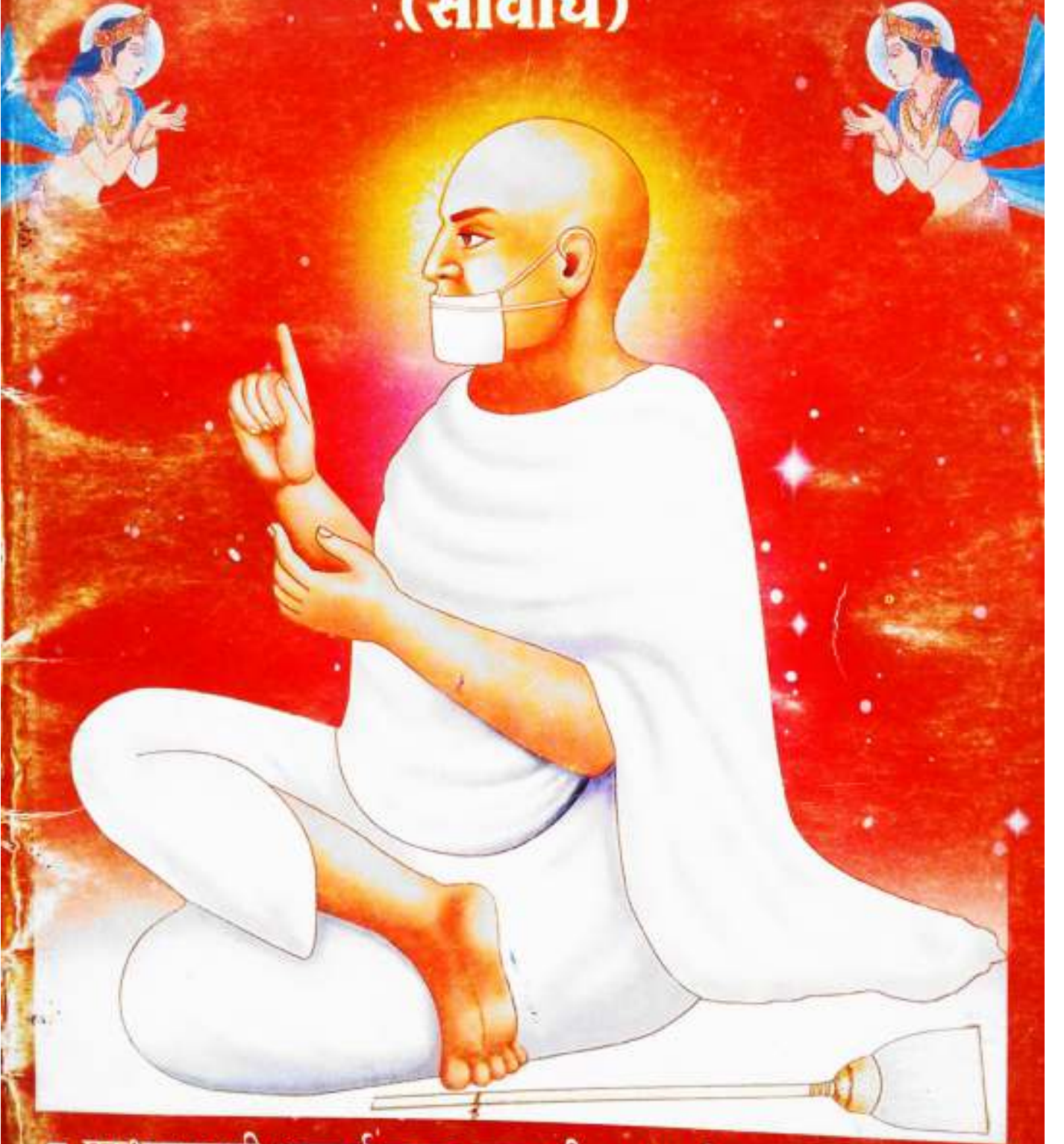


सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र (सविधि)



■ एकभवावतारी आचार्य सम्राट् पूज्य श्री 1008 श्री जयमलजी म.सा. ■

डॉ. श्री पदमचन्द्रजी म.सा.

॥ पूज्य श्री जयमल्लाय नमो नमः ॥

॥ जय गुरु शुभ ॥

॥ जय गुरु पारस ॥

सामायिक-प्रतिक्रमण सविधि-सार्थ



अणुप्पेहा ध्यान प्रणेता

डॉ. श्री पदमचन्द्रजी म.सा.

प्रकाशन

श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन

चेन्नई

❧ पुस्तक :
सामायिक-प्रतिक्रमण सविधि-सार्थ

❧ आशीर्वाद :
जयगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री शुभचन्द्रजी म.सा.,
उपाध्याय प्रवर पण्डित रत्न श्री पार्श्वचन्द्रजी म.सा.

❧ संकलन:
महामनीषी डॉ. पद्मचन्द्रजी म. सा.

❧ संस्करण : प्रथम 2000 प्रति वि.सं. 2047 सन् 1991
द्वितीय 10000 प्रति वि.सं. 2064 सन् 2007

❧ प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान :
श्री जयमल जैन पार्श्व-पद्मोदय फाउण्डेशन - चेन्नई
मोती ज्वेलर्स, 78, मिल्लर्स रोड, किलपॉक, चेन्नई - 600 010.
दूरभाष : 2642 2308

❧ मूल्य : 14/- रूपये

❧ मुद्रक :
नवकार प्रिंटर्स (निलेश जैन)
फोन : 044-2529 2233
मोबाइल : 98400-98686, 93808-98686, 93451-98686

॥ नमो सुयस्स ॥

सामायिक सूत्र सार्थ

1. नमस्कार सूत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सब्ब साहूणं ॥
एसो पंच नमोक्कारो, सब्ब पाव प्पणासणो ॥
मंगलाणं च सब्बेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

(भगवती सूत्र मंगलाचरण तथा कल्पसूत्र मंगलाचरण)

मूल शब्द	अर्थ
णमो	नमस्कार हो
अरिहंताणं	अरिहन्तों को
णमो	नमस्कार हो
सिद्धाणं	सिद्ध भगवान् को
णमो	नमस्कार हो
आयरियाणं	आचार्य महाराज को
णमो	नमस्कार हो
उवज्झायाणं	उपाध्याय महाराज को
णमो	नमस्कार हो
लोए	लोक में
सब्बसाहूणं	सभी साधु महाराज को ।
एसो	यह
पंच-नमोक्कारो	पांच परमेष्ठियों को किया हुआ नमस्कार
सब्बपावप्पणासणो	सभी पापों का नाश करने वाला है

च	और
सब्वेसिं	सभी
मंगलाणं	मंगलों में
पढमं	प्रथम (प्रधान)
मंगलं	मंगल
हवइ	है

2. गुरु वंदना (तिक्खुत्तो का पाठ)

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेमि वंदामि नमंसामि सक्कारेमि
सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि।

(रायप्पसेणी सूत्र 8)

मूल शब्द	अर्थ
तिक्खुत्तो	तीन बार
आयाहिणं	दक्षिण ओर से
पयाहिणं	प्रदक्षिणा
करेमि	करता हूँ
वंदामि	गुणगान (स्तुति) करता हूँ
नमंसामि	नमस्कार करता हूँ
सक्कारेमि	सत्कार करता हूँ
सम्माणेमि	सम्मान देता हूँ
कल्लाणं	कल्याण रूप
मंगलं	मंगल रूप
देवयं	धर्म देव रूप
चेइयं	ज्ञानवंत (गुरु की)
पज्जुवासामि	सेवा करता हूँ
मत्थएण	मस्तक नमा कर
वंदामि	वन्दना करता हूँ

3. इरियावहियं (इच्छाकारेणं) का पाठ

इच्छाकारेणं संदिसह भगवं ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं
इच्छामि पडिक्कमिउं। इरियावहियाए, विराहणाए, गमणागमणे।
पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-
मक्कडा-संताणा-संकमणे। जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया,
तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिंदिया। अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया,
संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्विया, ठाणाओ ठाणं संकामिया,
जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥

(हरिभद्रीयावश्यक, पृष्ठ 572)

मूल शब्द	अर्थ
भगवं	हे पूज्ये !
इच्छाकारेण	इच्छापूर्वक
संदिसह	आज्ञा दीजिए (कि मैं)
इरियावहियं	ईर्यापथिकी क्रिया का (चलने से लगने वाली क्रिया का)
पडिक्कमामि	प्रतिक्रमण करूं
इच्छं	प्रमाण है
इरियावहियाए	गमनागमन से होने वाली
विराहणाए	विराधना का
पडिक्कमिउं	प्रतिक्रमण करने की
इच्छामि	इच्छा करता हूं
गमणागमणे	जाने आने में
पाणक्कमणे	किसी प्राणी को दबाया हो
बीयक्कमणे	बीज को दबाया हो
हरियक्कमणे	वनस्पति को दबाया हो

ओसा	ओस
उत्तिंग	कीड़ीनगरा
पणग	पांच रंग की काई (लीलन-फूलन)
दग	कच्चा पानी
मट्टी	सचित्त मिट्टी (और)
मक्कड़ा-संताणा	मकड़ी के जालों को
संकमणे	कुचला हो
मे	मैंने
एगिंदिया	एक इन्द्रिय वाले
वेइंदिया	दो इन्द्रिय वाले
तेइंदिया	तीन इन्द्रिय वाले
चउरिंदिया	चार इन्द्रिय वाले
पंचिंदिया	पांच इन्द्रिय वाले
जे	जो
जीवा	जीव हैं (उन्हें)
विराहिया	पीड़ित किया हो
अभिहया	सम्मुख आते हुए को रोका हो
वत्तिया	धूल आदि से ढंका हो
लेसिया	मसला हो
संघट्टिया	इकट्टा किया हो
परियाविया	परिताप (कष्ट) पहुँचाया हो
क्लिामिया	क्लामना उपजाई हो, मृत तुल्य किया हो
उद्विया	चकित, स्तब्ध या भयभीत किया हो
ठाणाओ	एक स्थान से
ठाणं	दूसरे स्थान पर
संक्रमिया	रखा हो
जीवियाओ	जीवन से

ववरोविया	रहित किया हो
तरस्स	उसका
दुक्कडं	पाप
मि	मेरे लिए
मिच्छा	मिथ्या (निष्फल) हो

4. तरस्स उत्तरी का पाठ (कायोत्सर्ग सूत्र)

तरस्स उत्तरी-करणेणं पायच्छित्त-करणेणं, विसोही-करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं, कम्माणं, निग्घायणद्वाए ठामि काउस्सग्गं। अण्णत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमोक्कारेणं न पारेमि, ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

(हरिभद्रीयावश्यक, पृष्ठ 772)

मूल शब्द	अर्थ
तरस्स	उस पापयुक्त आत्मा को
उत्तरीकरणेणं	श्रेष्ठ-उत्कृष्ट बनाने के लिए
पायच्छित्तकरणेणं	प्रायश्चित्त करने के लिए
विसोहीकरणेणं	विशेष शुद्धि करने के लिए
विसल्लीकरणेणं	शल्यरहित बनाने के लिए
पावाणं	पाप
कम्माणं	कर्मों का
निग्घायणद्वाए	नाश करने के लिए
काउस्सग्गं	कायोत्सर्ग (शरीर के व्यापारों का त्याग)

ठामि	करता हूँ
ऊससिएणं	उच्छ्वास अर्थात् श्वास लेना
नीससिएणं	निःश्वास अर्थात् श्वास निकालना
खासिएणं	खाँसी आना
छीएणं	छींक आना
जंभाइएणं	उबासी आना
उड्डुएणं	डकार आना
वायनिसग्गेणं	अधोवायु निकलना
भमलीए	चक्कर आना
पित्तमुच्छ्राए	पित्त विकार की मूर्च्छा आना
सुहुमेहिं	सूक्ष्म (थोड़ा सा)
अंगसंचालेहिं	अंग का संचार (हिलना)
सुहुमेहिं	सूक्ष्म (थोड़ा सा)
खेलसंचालेहिं	कफ का संचार
सुहुमेहिं	थोड़ा सा
दिट्टिसंचालेहिं	दृष्टि का चलना
एवमाइएहिं	इत्यादि
आगारेहिं	आगारों के
अण्णत्थ	सिवाय दूसरे प्रकार से
मे	मेरा
काउस्सग्गो	कायोत्सर्ग
अभग्गो	अभग्न
अविराहिओ	अखंडित
हुज्ज	हो
जाव	जब तक
अरिहंताणं	अरिहंत
भगवंताणं	भगवान् को

नमोक्कारेणं
न पारेमि
ताव
ठाणेणं
मोणेणं
झाणेणं
अप्पाणं
कायं
वोसिरामि

नमस्कार कर के
न पारुं
तब तक
काया से स्थिर रह कर
वचन से मौन रह कर
मन से शुभ ध्यान धर कर
अपने (आत्मा) को
शरीर से
पृथक् करता हूँ

5. लोगस्स का पाठ (चतुर्विंशतिस्तव सूत्र)

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्म-तित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं-पि केवली ॥ 1 ॥
उसभमजियं च वंदे, संभव-मभिनंदणं च सुमइं च ।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ 2 ॥
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल, सिज्जंसं-वासुपुज्जं च ।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ 3 ॥
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च ।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ 4 ॥
एवं मए अमिथुआ, विहुय-रय-मला-पहीण-जर-मरणा ।
चउवी संपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ 5 ॥
कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा ।
आरुग्ग-बोहिलाभं, समाहिवर-मुत्तमं दिंतु ॥ 6 ॥

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥7॥

(हरिभद्रीयावश्यक, पृष्ठ 493-509)

मूल शब्द	अर्थ
लोगस्स	लोक में
उज्जोयगरे	प्रकाश (उद्योत) करने वाले
धम्म-तिथ्यारे	धर्म रूप तीर्थ को स्थापित करने वाले
जिणे	राग-द्वेष को जीतने वाले
अरिहंते	कर्म रूप शत्रु का नाश करने वाले
चउवीसं-पि	चौबीस ही
केवली	केवलज्ञानी तीर्थकरों की
कित्तइस्सं	मैं स्तुति करूँगा
उसभ च	श्री ऋषभदेव स्वामी की और
अजियं	श्री अजितनाथ स्वामी को
वंदे	वंदन करता हूँ
संभव	श्री संभवजिन को
अभिनंदणं च	श्री अभिनन्दन जिन को और
सुमइं च	श्री सुमतिजिन को और
पउमप्पहं	श्री पद्मप्रभजिन को
सुपासं च	श्री सुपाशर्वजिन को और
चंदप्पहं	श्री चन्द्रप्रभजिन
जिणं	जिनेश्वर को
वंदे	वंदन करता हूँ
सुविहिं च	श्री सुविधिजिन को और
पुष्पदंतं	श्री पुष्पदंत (सुविधिजिन का दूसरा नाम) स्वामी को

सीयल	श्री शीतलजिन को और
सिज्जंसं	श्री श्रेयांसजिन
वासुपुज्जं च	श्री वासुपूज्यजिन को और
विमल	श्री विमलजिन और
अणंतं	श्री अनन्तजिन को
जिणं	जिन (राग-द्वेष को जीतने वाले)
धम्मं च	श्री धर्मजिन को और
संतिं च	श्री शांतिजिन को
वंदामि	वन्दना करता हूँ
कुंथुं	श्री कुंथुजिन स्वामी को
अरं च	श्री अरजिन को
मल्लिं	श्री मल्लिजिन को
वंदे	वन्दना करता हूँ
मुणिसुव्वयं च	श्री मुनिसुव्रतजिन को और
नमि जिणं च	श्री नमिजिन को और
रिद्धनेमिं	श्री अरिष्टनेमि (श्री नेमिजिन)
पासं	श्री पार्श्वजिन को
तह	तथा
वद्धमाणं	श्री वर्द्धमान (महावीर) स्वामी को
वंदामि	मैं वंदना करता हूँ
एवं	इस प्रकार
मए	मेरे द्वारा
अभियुआ	स्तुति किए हुए
विहुयरयमला	पाप रज के मल से रहित
पहीणजरमरणा	बुढ़ापे तथा जन्म-मरण से मुक्त
तित्थयरा	तीर्थ की स्थापना करने वाले (तीर्थकर)

चउवीसंपि

जिणवरा

मे

पसीयंतु

कित्तिय

वंदिय

महिया

जे

लोगस्स

उत्तमा

सिद्धा

ए

आरुग्गबोहिलाभं

समाहिवरमुत्तमं

दित्तु

चंदेसु

निम्मलयरा

आइच्चेसु

अहियं

पयासयरा

सागरवरगंभीरा

सिद्धा

मम

सिद्धिं

दिसंतु

चौबीसों

जिनेश्वर देव

मुझ पर

प्रसन्न हों

वाणी से कीर्तन किए हुए

काया से वंदन किए हुए

मन से पूजन किए हुए

जो

लोक में

उत्तम

सिद्ध भगवान् हैं

वे

आरोग्य अर्थात् मोक्ष के लिए परमव में सम्यक्त्व
का लाभ और

सर्वोत्कृष्ट भाव समाधि को

देवें

चन्द्रमाओं से भी

विशेष निर्मल

सूर्यों से भी

अधिक

प्रकाश करने वाले

महासमुद्र से अधिक गंभीर

सिद्ध भगवान्

मुझ को

सिद्धि (मोक्ष)

देवें।

6. करेमि भंते का पाठ

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं
पज्जुवासामि, दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा
तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

(हरिभद्रीयावश्यक, पृष्ठ 454)

मूल शब्द

भंते

सामाइयं

करेमि

सावज्जं

जोगं

पच्चक्खामि

जाव

नियमं

पज्जुवासामि

दुविहं

तिविहेणं

मणसा

वयसा

कायसा

न करेमि

न कारवेमि

भंते

तस्स

अर्थ

हे पूज्य !

सामायिक को

मैं ग्रहण करता हूँ

सावद्य (पाप सहित)

व्यापार का

प्रत्याख्यान (त्याग) करता हूँ

जब तक

इस नियम को

मैं पालन करता रहूँ तब तक

दो करण से

तीन योग से अर्थात्

मन से

वचन से

काया (शरीर) से

सावद्य योग का सेवन नहीं करूँगा

दूसरे से नहीं कराऊँगा

हे पूज्य !

उससे (पहले के पाप से)

1. मुहूर्त एक (या 2, 3, 4-) उपरान्त न पालूँ तब तक

पडिक्कमामि
निंदामि
गरिहामि
अप्पाणं
वोसिरामि

मैं निवृत्त होता हूँ
उस पाप की, आत्मसाक्षी से निंदा करता हूँ
गुरु साक्षी से गर्हा-निंदा करता हूँ
अपनी आत्मा को उस पाप व्यापार से
हटाता हूँ, पृथक करता हूँ

7. णमोत्थुणं का पाठ

णमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं ! आइगराणं तित्थयराणं
सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरियाणं, पुरिस-
वर-गंध-हत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं,
लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं,
जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं,
धम्मसारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, दीवो, ताणं, सरणं गई,
पइड्ढा, अप्पडिहय-वरणाण-दंसणधराणं वियट्टुत्तमाणं, जिणाणं, जावयाणं,
तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं, बोहयाणं, मुत्ताणं, मोयगाणं । सब्बन्नूणं,
सब्बदरिसीणं, सिव-मयल-मरुय-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-
सिद्धिगई-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं' नमो जिणाणं जियभयाणं ।

(औपपातिक सूत्र 12, कल्पसूत्र शक्रस्तव)

मूल शब्द

अरिहंताणं भगवंताणं

णमोत्थुणं

आइगराणं

तित्थयराणं

अर्थ

अरिहंत भगवान् को

नमस्कार हो

धर्म की आदि (प्रारम्भ) करने वाले

धर्म-तीर्थ की स्थापना करने वाले

1. दूसरी बार नमोत्थुणं बोलते समय "संपत्ताणं" के स्थान पर "संपाविउकामाणं" बोलना चाहिए ।

सयंसंबुद्धाणं	स्वयं बोध पाए हुए
पुरिसुत्तमाणं	पुरुषों में श्रेष्ठ
पुरिससीहाणं	पुरुषों में सिंह के समान
पुरिसवरपुण्डरियाणं	पुरुषों में श्रेष्ठ कमल के समान
पुरिसवरगंधहत्थीणं	पुरुषों में प्रधान गंधहस्ती के समान
लोगुत्तमाणं	लोक में उत्तम
लोगनाहाणं	लोक के नाथ
लोगहियाणं	लोक का हित करने वाले
लोगपर्इवाणं	लोक के लिए दीपक के समान
लोगपज्जोयगराणं	लोक में उद्योत करने वाले
अभयदयाणं	अभय देने वाले
चक्खुदयाणं	ज्ञान रूपी नेत्र देने वाले
मग्गदयाणं	धर्म मार्ग के दाता
सरणदयाणं	शरण देने वाले
जीवदयाणं	संयम या ज्ञान रूपी जीवन देने वाले
बोहिदयाणं	बोधि अर्थात् सम्यक्त्व देने वाले
धम्मदयाणं	धर्म के दाता
धम्मदेसयाणं	धर्म के उपदेशक
धम्मनायगाणं	धर्म के नायक
धम्मसारहीणं	धर्म के सारथी
धम्मवरचाउरंत चक्कवट्टीणं	चार गति का अन्त करने वाले, धर्म रूप चक्र को धारण करने वाले चक्रवर्ती रूप
दीवो	संसार-समुद्र में द्वीप के समान
ताणं	रक्षक रूप
सरण	शरणभूत
गई	गति रूप
पइट्ठा	संसार-कूप में गिरते हुए प्राणियों के लिए

	आधार रूप
अप्पडिहयवर नाणदंसणधराणं	अप्रतिहत (बाधा रहित) तथा श्रेष्ठ अर्थात् पूर्ण ज्ञान-दर्शन के धारक
वियट्टुछउमाणं	छद्म अर्थात् घाती-कर्म के धारक
जिणाणं	स्वयं राग-द्वेष को जीतने वाले
जावयाणं	औरों को जिताने वाले
तिन्नाणं	स्वयं संसार से तिरे हुए
तारयाणं	दूसरों का तारने वाले
बुद्धाणं	स्वयं बोध पाये हुए
बोहयाणं	दूसरों को बोध प्राप्त कराने वाले
मुत्ताणं	स्वयं कर्म बन्धन से छूटे हुए
मोयगाणं	दूसरों को छुड़ाने वाले
सव्वन्नूणं	सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाले)
सव्वदरिसीणं	सर्वदर्शी (सब कुछ देखने वाले)
सिव	निरुपद्रव, कल्याण स्वरूप
मयल	स्थिर
मरुय	रोग रहित
मणंत	अनंत (अंतरहित)
मक्खय	क्षय-रहित
मव्वाबाह	बाधा (पीड़ा) रहित
मपुणरावित्ति	पुनरागमन रहित ऐसे
सिद्धिगई नामधेयं	सिद्धि गति नामक
ठाणं	स्थान को
संपत्ताणं	प्राप्त हुए
जियमयाणं	भय को जीतने वाले
जिणाणं	जिनेश्वर भगवान् को
नमो	नमस्कार हो

सामायिक पारने का पाठ

एयस्स नवमस्स सामाइय-वयस्स पंच अइयारा जाणियव्वा न
समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-मण-दुप्पणिहाणे, वय-दुप्पणिहाणे,
काय-दुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइ अकरणया, सामाइयस्स अणवड्डियस्स
करणया, तस्स मिच्छा मि दुक्कडं। (हरिभद्रीयावश्यक, पृष्ठ 813)

सामाइयं सम्मं काएणं न फासियं, न पालियं न तीरियं, न
किट्टियं, न सोहियं, न आराहियं, आणाए अणुपालियं, न भवइ तरस्स
मिच्छामि दुक्कडं।

मूल शब्द	अर्थ
एयस्स नवमस्स	इस नवमें
सामाइय-वयस्स	सामायिक व्रत में
पंच अइयारा	पाँच अतिचार
जाणियव्वा	जानने योग्य हैं किन्तु
न समायरियव्वा	आचरण करने योग्य नहीं है
तंजहा ते	वे इस प्रकार हैं उनकी
आलोउं	आलोचना करता हूँ
मणदुप्पणिहाणे	मन में बुरे विचार उत्पन्न करना
वयदुप्पणिहाणे	कठोर या पाप-जनक वचन बोलना
कायदुप्पणिहाणे	बिना देखे पृथ्वी पर बैठना उठना आदि
सामाइयस्स	सामायिक करने का काल
सइ अकरणया	भूल जाना-
सामाइयस्स अणवड्डियस्स करणया	सामायिक का समय होने से पहले पार लेना या अनवस्थित रूप से सामायिक करना
तस्स	उससे होने वाला
मि	मेरा

दुक्कडं	पाप
मिच्छा	मिथ्या (निष्फल) हो
सामाइयं	सामायिक का
सम्मं काएणं	सम्यक् काया से
न फासियं	स्पर्श न किया हो
न पालियं	पालन न किया हो
न सोहियं	शुद्धता पूर्वक न की हो
न किट्टियं	कीर्तन न किया हो
न आराहियं	आराधन न किया हो
आणाए	आज्ञानुसार
अणुपालियं न भवइ	पालन न किया हो
तरस्स	उससे होने वाला
मिच्छामि दुक्कडं	मेरा पाप मिथ्या हो

सामायिक में दस मन के, दस वचन के, बारह काया के, इन बत्तीस दोषों में से कोई दोष लगा हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सामायिक में स्त्री-कथा¹, भक्त- (भोजन) कथा, देश-कथा, राज-कथा, इन चार कथाओं में से कोई कथा की हो, तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सामायिक में आहार-संज्ञा, भय-संज्ञा, मैथुन-संज्ञा, परिग्रह-संज्ञा, इन चार संज्ञाओं में से किसी संज्ञा का सेवन किया हो, तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सामायिक में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, जानते, अजानते मन, वचन, काया से कोई दोष लगा हो, तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

1. स्त्रियाँ यहाँ पर "पुरुष कथा" ऐसा बोले।

सामायिक व्रत विधिपूर्वक लिया, विधि से पूर्ण किया, विधि में कोई अविधि हुई हो, तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सामायिक का पाठ बोलने में काना-मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ, न्यूनाधिक विपरीत पढ़ने में आया हो, तो अनन्त सिद्ध केवली भगवान् की साक्षी से तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सामायिक लेने की विधि

सर्वप्रथम स्थान, आसन, पूँजनी, मुखवस्त्रिका आदि की पडिलेहणा करना। फिर यतनापूर्वक स्थान पूँजकर आसन बिछाना। बाद में आसन छोड़कर, गुरुदेव की तरफ, न हो तो पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके दोनों हाथ जोड़कर, पंचांग नमाकर "तिक्खुत्तो" के पाठ से तीन बार विधिपूर्वक वंदना करना और अपने धर्माचार्यजी (गुरुदेव) की आज्ञा लेकर "नमस्कार मन्त्र", "इच्छाकारेणं" और "तस्स उत्तरी" का पाठ बोलकर काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग में एक "इच्छाकारेणं" का पाठ मन में कहना। पाठ के अन्त में "तस्स मिच्छामि दुक्कडं" के स्थान पर "तस्स आलोउं" कहना एवं "नवकार" के पाँच पदों का पाठ मन में कहना। फिर प्रकट उच्चारण में "नमो अरिहंताणं" ऐसा कहकर कायोत्सर्ग पारना। फिर "ध्यान शुद्धि का पाठ" (काउस्सग्ग में आर्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया हो, मन, वचन, काया चलित हुए हों तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं) और एक "लोगस्स" का पाठ कहना। फिर "करेमि भंते" के पाठ में जहाँ "जावनियमं" शब्द आता है, वहाँ जितनी सामायिक लेनी हो, उतनी सामायिक लेकर आगे का पाठ समाप्त करना। फिर नीचे बैठकर बायाँ घुटना खड़ा रखकर दो बार "णमोत्थुणं" का पाठ बोलना। दूसरी बार "णमोत्थुणं" का पाठ बोलते समय "ठाणं संपत्ताणं" के बदले में "ठाणं संपाविउकामाणं" बोलना।

सामायिक में नया ज्ञान सीखना, सीखे हुए ज्ञान थोकड़ा, बोल आदि चितारना, स्वाध्याय करना, बड़ी साधु वंदना, चमत्कारी जय जाप, प्रार्थना, स्तोत्र, स्तुति आदि बोलना, माला फेरना आदि ज्ञान-ध्यान करना। आशय यह है कि सामायिक का काल प्रमाद रहित होकर ज्ञान-ध्यान, चिन्तन, मनन में बिताना चाहिए। संत मुनिराज बिराजते हों, तो उनकी ओर पीठ करके नहीं बैठना चाहिए। स्वाध्याय, व्याख्यान या उपदेश दे रहे हों, तो उसमें उपयोग रखना चाहिए। सामायिक में विकारजनक उपकरण नहीं रखने चाहिए। सामायिक के बत्तीस दोषों का सेवन नहीं करना चाहिए।

सामायिक पारने की विधि

सामायिक पारने के समय "नवकार मन्त्र", "इच्छाकारेणं" और "तस्स उत्तरी" का पाठ बोलकर काउस्सग्ग करना। काउस्सग्ग में एक लोगस्स व नवकार के पाँच पदों को मन में कहना और "णमो अरिहंताणं" कहकर काउस्सग्ग पारना व ध्यान शुद्धि पाठ बोलना। फिर "लोगस्स" का पाठ प्रगट कहना। फिर सविधि दो बार "णमोत्थुणं" का पाठ बोलना। फिर "एयस्स नवमस्स" आदि सामायिक पारने का पाठ बोलकर अन्त में तीन बार "नमस्कार मन्त्र" गिनकर सामायिक पारना।

सामायिक के बत्तीस दोष

मन के दस दोष

अविवेग जसोकित्ती, लाभत्थी-गव्व-भय-नियाणत्थी।
संसय रोस अविणउ, अबहुमाण ए दोसा भणियव्वा।

1. **अविवेक** : सामायिक में सावध और निरवद्य, उचित तथा अनुचित का विवेक न रखना, सामायिक का अविवेक दोष है।
2. **यश-कीर्ति** : समाज में मेरी प्रशंसा होगी, आदर-सत्कार होगा। ऐसे विचारों से सामायिक करें, इसको यश-कीर्ति दोष कहते हैं।
3. **लाभार्थ** : धन आदि के लाभ की इच्छा से सामायिक करें। यह सामायिक का लाभार्थ दोष है।
4. **गर्व** : मैं बहुत सामायिक करने वाला धर्मात्मा हूँ, इस प्रकार अहंकार करना गर्व दोष है।
5. **भय** : भय के कारण सामायिक करना।
6. **निदान** : सामायिक के बदले में पौद्गलिक फल चाहना।
7. **संशय** : सामायिक के फल में सन्देह रखकर सामायिक करना।
8. **रोष** : सामायिक में क्रोध, द्वेष, ईर्ष्यादि करना अथवा क्रोध, मान, माया और लोभ का सेवन करना।
9. **अविनय** : बेगार की तरह विनय रहित सामायिक करना।
10. **अबहुमान** : भक्ति-आदर-भाव से रहित सामायिक करना।

वचन के दस दोष

कुवयण-सहसाकारे, सछन्द-संखेव-कलहं च ।

विगहा वि हासोऽशुद्धं, णिरवेक्खो मुणमुणा दोसा दस ॥

1. **कुवचन** : खराब वचन बोलना।
2. **सहसाकार** : बिना विचारे बोलना।
3. **स्वछन्द** : धर्म विरुद्ध, दोषजनक शब्द बोलना।
4. **संक्षेप** : सामायिक के पाठों को संक्षेप में बोलना।
5. **कलह** : क्लेश उत्पन्न करने वाली बात कहना।
6. **विकथा** : स्त्री-कथा आदि विकथा करना।
7. **हारस्य** : हँसी करना, कौतूहल करना।
8. **अशुद्ध** : सामायिक के पाठों का अशुद्ध उच्चारण करना।

9. **निरपेक्ष** : बिना उपयोग एवं असावधानी से बोलना, शास्त्र निरपेक्ष वचन बोलना।
10. **मुग्ध** : गुणगुनाते हुए स्पष्टतारहित पाठ का उच्चारण करना।

काया के बारह दोष

कुआसन-चलासन-चलदिष्टी,
सावज्ज- -किरियालंबणाकुंचण-पसारणं।
आलस-मोडण-मल-विमासनं,
निद्रा-वेयावच्चत्ति बारस काय-दोसा॥

1. **कुआसन** : पाँव पर पाँव चढ़ाकर अभिमान के आसन से बैठना अथवा अंगों को हिलाते रहना।
2. **चलासन** : स्थिर नहीं बैठकर आसन बदलते रहना। उठ-बैठ करते रहना अथवा अंगों को हिलाते रहना।
3. **चलदृष्टि** : दृष्टि स्थिर नहीं रखकर इधर-उधर देखते रहना।
4. **सावद्य क्रिया** : शरीर से पापकारी क्रिया करना।
5. **आलम्बन** : बिना कारण दीवार आदि का सहारा लेना।
6. **आकुंचन प्रसारण** : बिना कारण हाथों-पैरों को बार-बार फैलाना, समेटना।
7. **आलस्य** : सामायिक में आलस्य करना, अँगड़ाई लेना।
8. **मोडन** : हाथ-पाँव की उँगलियाँ चटकाना।
9. **मल** : शरीर का मैल उतारना।
10. **विमासन** : शोक प्रदर्शक आसन से बैठना अथवा बिना पूंजे खुजलाना या हलन-चलन करना।
11. **निद्रा** : नींद लेना।
12. **वैयावृत्य** : निष्कारण दूसरों से अपनी सेवा कराना।

ॐ सामायिक सूत्र समाप्त ॐ

सविधि श्रावक प्रतिक्रमण

सविधि चउवीसत्थव करने के बाद गुरु महाराज के सन्मुख अथवा पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके तिक्खुत्तो के पाठ से 3 बार वंदना करके देवसिय¹ प्रतिक्रमण करने की "आज्ञा है" ऐसा कहकर प्रतिक्रमण प्रारम्भ करें।

इच्छामि णं भन्ते का पाठ

इच्छामि णं भन्ते। तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे, देवसियं पडिक्कमणं ठाएमि। देवसिय-नाण-दंसण-चरित्ता-चरित्त-तव-अइयार-चिंतणत्थं करेमि काउरसगं।

मूल शब्द	अर्थ
भन्ते	हे पूज्य !
तुब्भेहिं	आप की
अब्भणुण्णाए	आज्ञा प्राप्त
समाणे	होने पर (मैं)
इच्छामि	इच्छा करता हूँ
णं	कि
देवसियं	दिवस-संबंधी
पडिक्कमणं	प्रतिक्रमण
ठाएमि	करुं (तथा)
देवसिय-	दिवस संबंधी
नाण-	ज्ञान,
दंसण-	दर्शन (सम्यक्त्व)

1. रायसी, पक्खिय, चउमासिय, संवच्छरिय, प्रसंग के अनुसार बोलें।

चरित्ताचरित्त-
तव-
अइयार-
चित्तणत्थं
काउस्सग्गं
करेमि

चारित्राचारित्र (श्रावक व्रत) (एवं)
तप (संबंधी)
अतिचारों - दोषों का
चिंतन करने के लिए
कायोत्सर्ग
करता हूँ

प्रथम सामायिक आवश्यक

विधि : "तिक्खुत्तो" के पाठ से तीन बार विधियुक्त वन्दना करने के पश्चात् "प्रथम सामायिक आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहकर निम्न पाठ बोलें-

1. नमस्कार सूत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सब्ब साहूणं ॥
एसो पंच नमोक्कारो, सब्ब पाव प्पणासणो ॥
मंगलाणं च सब्बेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

2. सामायिक सूत्र

करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि जाव नियमं पज्जुवासामि । दुविहं तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा-वयसा-कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ।

3. इच्छामि ठामि का पाठ

(संक्षिप्त प्रतिक्रमण सूत्र)

इच्छामि ठामि काउस्सग्गं जो मे देवसिओ अइयारो कओ, काइओ, वाइओ, माणसिओ, उरसुत्तो, उम्मग्गो, अकप्पो, अकरणिज्जो,

दुज्झाओ, दुव्विचिंतिओ अणायारो अणिच्छियव्वो असावगपाउग्गो, नाणे तह दंसणे चरित्ता चरित्ते सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्ह मणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं, चउण्हं सिक्खावयाणं बारस विहरस्स सावग-धम्मस्स जं खंडियं जं विराहियं तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

मूल शब्द	अर्थ
ठामि काउरस्सगं	कायोत्सर्ग करना
इच्छामि	चाहता हूँ
मे	मैंने
जो	जो
देवसिओ	दिवस संबंधी
काइओ	कायिक
वाइओ	वाचिक (एवं)
माणसिओ	मानसिक
उस्सुत्तो	उत्सूत्र रूप
उम्मग्गो	उन्मार्ग रूप
अकप्पो	अकल्पनीय
अकरणिज्जो	नहीं करने योग्य
दुज्झाओ	दुष्ट ध्यान
दुव्विचिंतिओ	बुरे विचार
अणायारो	अनाचार
अणिच्छियव्वो	अवांछनीय
असावग पाउग्गो	श्रावक वृत्ति के विपरीत कार्य (रूप)
अइयारो	अतिचार
कओ	किया हो
नाणे	ज्ञान में
तह	तथा

दंसणे
 चरित्ताचरित्ते
 सुए
 सामाइए
 तिण्हं गुत्तीणं
 चउण्हं कसायाणं
 पंचण्हं मणुब्बयाणं
 तिण्हं गुणब्बयाणं
 चउण्हं सिक्खावयाणं
 वारस विहस्स
 सावग धम्मस्स
 जं खंडियं
 जं विराहियं
 तस्स
 मिच्छामि दुक्कडं।

दर्शन में
 देशव्रत में
 श्रुत शास्त्र में
 सामायिक में
 तीन गुणियों को
 चार कषायों द्वारा
 पाँच अणुव्रतों को
 तीन गुणव्रतों को
 चार शिक्षा व्रतों को
 बारह प्रकार के (इस प्रकार)
 श्रावक धर्म को
 जो एक देश से खण्डित किया हो
 जो सर्वथा विराधित किया हो
 उस सम्बन्धी
 मेरा पाप मिथ्या हो

विधि : तस्स उत्तरी का पाठ मोणेणं तक प्रकट बोले। शेष पाठ मन में बोल के 99 अतिचारों का मन में चिंतन करे। कायोत्सर्ग पूर्ण करने के पूर्व पूरा नवकार बोलकर प्रकट में "नमो अरिहंताणं" कहकर कार्योंत्सर्ग पाले।

99. अतिचार (मूल) (कायोत्सर्ग के लिए)

➤ जं वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुट्ठुऽदिण्णं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाइए सज्झाइयं, सज्झाइए न सज्झाइयं नाणस्स अइयारे आलोएमि।

- संका, कंखा, वितिगिच्छा, परपासंड-पसंसा, परपासंडसंथवो दंसणस्स अइयारे आलोएमि।
- बंधे, वहे, छविच्छेए, अइभारे, भत्तपाणविच्छेए पढमस्स वयस्स अइयारे आलोएमि।
- सहसब्भक्खाणे, रहस्सब्भक्खाणे, सदारमंतभेए, मोसोवएसे कूडलेहकरणे बीयस्स वयस्स अइयारे आलोएमि।
- तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूड-तुल्ल-कूडमाणे, तप्पडिरुवग-ववहारे तइयस्स वयस्स अइयारे आलोएमि।
- इत्तरिय-परिग्गहिया-गमणे, अपरिग्गहिया-गमणे, अनंग-कीडा, पर-विवाह-करणे, कामभोग-तिव्वाभिलासे चउत्थस्स वयस्स अइयारे आलोएमि।
- खेत-वत्थु-प्पमाणाइक्कमे, हिरण्ण-सुवण्ण-प्पमाणा इक्कमे, धण-धाण्ण-प्पमाणाइक्कमे, दुपय-चउप्पय-प्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे, पंचमस्स वयस्स अइयारे आलोएमि।
- उड्ढदिसि-प्पमाणाइक्कमे, अहोदिसि-प्पमाणाइक्कमे, तिरियदिसि-प्पमाणाइक्कमे, खित्तवुद्धी, सइ-अंतरद्धा छट्ठस्स वयस्स अइयारे आलोएमि।
- सचित्ताहारे, सचित्त-पडिबद्धाहारे, अप्पउलि-ओसहिभक्खणया दुप्पउलि ओसहि भक्खणया तुच्छोसहि भक्खणया सत्तमस्स वयस्स अइयारे आलोएमि। इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे जंत-पीलण-कम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सर-दह-तलाय-सोसणया, असईजण-पोसणया पण्णरस कम्मादाणे आलोएमि।
- कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोग-परिभोग-अइरित्ते अट्टमस्स वयस्स अइयारे आलोएमि।
- मण-दुप्पणिहाणे, वय-दुप्पणिहाणे, काय-दुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइ-अकरणया, सामाइयस्स-अणवट्ठियस्स-करणया नवमस्स वयस्स

- अइयारे आलोएमि ।
- आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सदाणुवाए, रूवाणुवाए, बहिया-पुग्गल-पक्खेवे दसमस्स वयस्स अइयारे आलोएमि ।
 - अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-सेज्जासंथारए, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-सेज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय-दुप्पडिलेहिय-उच्चार-पासवण-भूमि, अप्पमज्जिय-दुप्पमज्जिय-उच्चार-पासवण भूमि, पोसहस्स-सम्मं-अणणुपालणया एकारसमस्स वयस्स अइयारे आलोएमि ।
 - सचित्त-निक्खेवणया, सचित्त-पिहणया, कालाइक्कमे, परोवएसे, मच्छरियाए दुवालसमस्स वयस्स अइयारे आलोएमि ।
 - इहलोगा-संसप्पओगे, परलोगा-संसप्पओगे, जीविया-संसप्पओगे, मरणा-संसप्पओगे, कामभोगा-संसप्पओगे तवस्स अइयारे आलोएमि ।
 - पाणाइवाए, मोसावाए, अदिण्णादाणे, मेहुणे, परिग्गहे, कोहे, माणे, माए, लोहे, रागे, दोसे, कलहे, अब्भक्खाणे, पेसुण्णे, पर-परिवाए, रइ-अरइ, मायामोसे, मिच्छादंसणसल्ले अट्टारस्स पावट्टाणे आलोएमि ।
 - इच्छामि आलोइउं जो मे देवसिओ अइयारो कओ सावग-धम्मस्स जं खंडियं, जं विराहियं ।
 - णमो अरिहंताणं णमो लोए सब्ब साहूणं ।
- तक बोलकर प्रकट में नमो अरिहंताणं के उद्घोष के साथ कायोत्सर्ग पूर्ण करें ।

ध्यान शुद्धि पाठ

कायोत्सर्ग में प्रमादवश आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याया हो, मन, वचन, काया चलित हुए हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

दूसरा चउवीसत्थव आवश्यक

विधि : तीन बार तिक्खुतो के पाठ से वंदना करके "दूसरे चउवीसत्थव आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहकर लोगस्स बोलें ।

तीसरा वंदन आवश्यक

विधि : तिक्खुत्तो के पाठ से तीन बार विधियुक्त वंदन करके, "तीसरे वंदन आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहकर दो बार "इच्छामि खमासमणो" का पाठ बोलें।

इच्छामि खमासमणो का पाठ

(गुरुवंदन सूत्र)

इच्छामि खमासमणो ! वंदितुं जावणिज्जाए निसीहियाए अणुजाणह मे मिउग्गहं, निसीहि, अहो कायं काय संफासं, खमणिज्जो भे किलामो, अप्पकिलंताणं बहुसुभेणं भे दिवसो वड्क्कंतो ? जत्ता भे ? जवणि-ज्जं च भे ? खामेमि खमासमणो ! देवसियं वड्क्कमं, आवस्सियाए पडिक्कमामि खमासमणाणं देवसियाए आसायणाए तितीसऽण्णयराए जं किंचि मिच्छाए मणदुक्कडाए वयदुक्कडाए कायदुक्कडाए कोहाए माणाए मायाए लोभाए सब्बकालियाए सब्बमिच्छोवयाराए सब्बधम्माड्क्कमणाए आसायणाए जो मे देवसियो अइयारो कओ, तस्स खमासमणो ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

मूल शब्द	अर्थ
इच्छामि	इच्छा करता हूँ
खमासमणो !	हे क्षमा श्रमण !
जावणिज्जाए	शक्ति के अनुसार
निसीहियाए	पाप-क्रियाओं से निवृत्त होकर
वंदितुं	(आपको) वंदन करना
इच्छामि	चाहता हूँ। (अतः)
मे	मुझे
मिउग्गहं	(आपकी) मर्यादित भूमि (में प्रवेश) की

अणुजाणह
निसीहि
अहोकायं
कायसंफासं
भे
किलामो
खमणिज्जो
अप्पकिलंताणं
भे
दिवसो
बहुसुभेणं
वड्ककंतो ?
जत्ता
भे ?
जवणिज्जं च
भे ?
खमासमणो !
देवसियं
वड्ककमं
खामेमि
आवस्सियाए

पडिक्कमामि
खमासमणाणं
देवसियाए
तित्तीसऽण्णयराए
आसायणाए

आज्ञा दीजिए
अशुभ क्रिया को रोक कर
(आपके) चरणों का (मैं अपने)
मस्तक या हाथ से स्पर्श (करता हूँ)
आपको (मेरे स्पर्श से)
किलामना (बाधा) हुई हो (तो)
क्षमा करें
ग्लानि-रहित
आपका
दिन
बहुत शुभ (संयमी क्रियाओं) से
व्यतीत हुआ ?
(संयम) यात्रा
आपकी (निर्बाध है ?)
और मन तथा इन्द्रियों की बाधा से रहित
आपका (शरीर स्वस्थ है ?)
हे क्षमा श्रमण !
दिवस संबंधी
अपराध के लिए
क्षमा चाहता हूँ
आवश्यक क्रिया करने में जो भी विपरीत
अनुष्ठान हुआ हो, उससे
निवृत्त होता हूँ
आप क्षमा श्रमण की
दैवसिक-दिन भर में
तैंतीस में से किसी भी
आशातना द्वारा

जं किंचि
मिच्छाए
मणदुक्कडाए
वयदुक्कडाए
कायदुक्कडाए
कोहाए
माणाए
मायाए
लोभाए
सब्बकालियाए
सब्बमिच्छोवयासाए
सब्बधम्माइक्कमणाए
आसायणाए
जो मे
देवसियो
अइयारो
कओ
तरस्स
खमासमणो !
पडिक्कमामि
निंदामि
गरिहामि
अप्पाणं वोसिरामि

यत्किंचित्-थोड़ी भी
मिथ्या-भाव से की गई
मन के दुष्कृत-अशुभ विचारों, से की गई
वचन के दुष्कृत-अशुभ कथन, से की गई
काय के दुष्कृत-अयुक्त आसन, से की गई
क्रोध से की गई
मान से की गई
माया से की गई
लोभ से की गई
सब काल में की गई एवं
सब मिथ्या आचरणों से पूर्ण (तथा)
सब धर्म-मर्यादाओं का उल्लंघन करने वाली
आशातना से
जो मैंने
दिवस संबंधी
अतिचार-भूल
कर दी हो,
उसका
हे क्षमा श्रमण !
प्रतिक्रमण करता हूँ
(उसकी) निंदा करता हूँ
गुरु के समक्ष निंदा करता हूँ
आत्मा को (अपने-अपने) पाप संबंधी व्यापारों
से निवृत्त करता हूँ।

खमासमणो देने की विधि

1. गुरु के समक्ष या पूर्व-उत्तर के मध्य ईशानकोण में अपने आसन को छोड़कर, खड़े रहकर, हाथ जोड़कर और शीश झुकाकर "निसीहि" तक पाठ पढ़ें। यदि गुरुदेव हों, तो "निसीहि" उच्चारण के साथ उनकी चारों ओर की देह प्रमाण (3 ॥ हाथ) भूमि में प्रवेश करें। फिर दोनों घुटनों के बल बैठकर, दोनों घुटनों के बीच, दोनों हाथ जोड़ें। यों गर्भस्थ शिशु के समान विनीत वज्रासन से बैठकर "अ" का उच्चारण मंद स्वर से करते हुए दोनों हाथों को लंबा करके गुरु चरणों को क्लामना न पहुँचे - इस प्रकार विवेक से गुरु चरणों को स्पर्श करें। यदि गुरुदेव न हों, तो चरण स्पर्श की भावना करते हुए भूमि स्पर्श करें। फिर "हो" का उच्च स्वर से उच्चारण करते हुए दोनों हाथों से अपने सिर का स्पर्श करें। "का"- "य" तथा "का"- "य" में भी इसी क्रम व विधि से चरण व सिर का स्पर्श करे। "संफासं" कहते हुए गुरु चरणों में मस्तक का भी स्पर्श करे। इस प्रकार तीन आवर्तन और एक सिर का झुकाव हुआ। इसके बाद "खमणिज्जो" से "दिवसो वइक्कंतो" तक का पाठ सामान्यतया पढ़ें। "ज-त्ता-भे", "ज-व-णि", "ज्जं-च-भे" इन तीन अक्षर-समूह में से पहले-पहले अक्षर का मंद स्वर से उच्चारण करते हुए गुरु चरण स्पर्श करे। दूसरे-दूसरे अक्षर का मध्यम स्वर से उच्चारण करते हुए हाथों को भूमि तथा सिर के बहुमध्य में पलभर रोके। फिर तीसरे-तीसरे अक्षर का उच्च स्वर से उच्चारण करते हुए स्वयं का सिर स्पर्श करे। पश्चात् गुरु के चरणों में मस्तक झुकावे। यों दूसरे तीन आवर्तन और एक सिर का झुकाव हुआ। उसके बाद "खामेमि" से "वइक्कमं" तक का पाठ सामान्यतया पढ़े। "आवस्सियाए" कहने के साथ ही खड़ा हो जाए और गुरु की भूमि में प्रवेश किए हुए हो, तो बाहर निकल जावें एवं आगे का सारा पाठ सामान्यतया पढ़ें।

दूसरी बार भी इसी प्रकार पढ़ें। अंतर यही है कि दूसरी बार में "आवस्सियाए" इतना पाठ न पढ़े। खड़े न हो तथा बाहर भी न निकले।

दोनों खमासमणो में सब आवर्तन बारह, सिर झुकाव चार, प्रवेश दो और निकलना एक बार होता है।

चौथा प्रतिक्रमण आवश्यक

विधि : तीन बार तिकखुत्तो के पाठ से वंदना करके चौथे प्रतिक्रमण आवश्यक की आज्ञा है ऐसा कहना एवं खड़े होकर (शक्ति नहीं हो तो बायाँ घुटना ऊँचा रखकर बैठना)।

आगमे तिविहे का पाठ

(ज्ञान, ज्ञानातिचार-प्रतिक्रमण सूत्र)

आगमे तिविहे पण्णत्ते, तं जहा-सुत्तागमे, अत्थागमे, तदुभयागमे।
ऐसे तीन प्रकार के आगम-रूप ज्ञान के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो तो आलोऊं। जं वाइद्धं, वच्चामेलियं, हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुट्ठुऽदिण्णं, दुट्ठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाए सज्झाइयं, सज्झाए न सज्झाइयं। भणतां गुणतां विचारतां ज्ञान और ज्ञानवंत पुरुषों की अविनय आशातना की हो तो तरस्स मिच्छामि दुक्कडं।

मूल शब्द	अर्थ
आगमे	आगम
तिविहे	तीन प्रकार का
पण्णत्ते	बताया गया है
तं जहा	वह इस प्रकार-
सुत्तागमे	सूत्र रूप आगम
अत्थागमे	अर्थ रूप आगम
तदुभयागमे	सूत्र एवं अर्थ-उभय रूप आगम

जं
वाइद्धं
वच्चाभेलियं

हीणक्खरं
अच्चक्खरं
पयहीणं
विणयहीणं
जोगहीणं
घोसहीणं
सुट्ठुऽदिण्णं
दुट्ठुपडिच्छियं
अकाले

सज्झाओ
कओ
काले
सज्झाओ
न कओ
असज्झाए
सज्झाइयं
सज्झाए
न सज्झाइयं

तस्स
मि
दुक्कडं
मिक्ख

जो (सूत्र-पाठ को)
आगे-पीछे (बोला हो)
एक सूत्र का पाठ अन्य सूत्र के पाठ में मिला
कर बोला हो
अक्षर कम बोला हो
अक्षर बढ़ाकर बोला हो
पदहीन (बोला हो)
विनयहीन (बोला हो)
योग-हीन (बोला हो)
घोष-हीन (बोला हो)
शास्त्रग्रहण शक्ति से अधिक ज्ञान दिया हो
दुष्ट भाव से ग्रहण किया हो
अकाल में
स्वाध्याय (कालिक सूत्र का पाठ)
किया हो
काल में
स्वाध्याय
न किया हो
अस्वाध्याय में
स्वाध्याय (किया हो)
स्वाध्याय में
स्वाध्याय (न किया हो)
तत्संबंधी
मेरा
दुष्कृत (पाप)
मिथ्या (निष्फल) हो।

अरिहंतो महदेवो का पाठ

(सम्यक्त्व सूत्र)

अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ।
जिणपण्णत्तं तत्तं, इअ सम्मत्तं मए गहियं ॥
परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठ परमत्थ सेवणा वा वि ।
वावण्णकुदंसण वज्जणा, य सम्मत्त सदहणा ॥

इअ सम्मत्तस्स पंच अइयारा पेयाला जाणियव्वा न सामायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-संका, कंखा, वितिगच्छा, परपासंड-पसंसा, परपासंड-संथवो इस प्रकार समकित रत्न पदार्थ के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - श्री जिन वचन में शंका की हो, परदर्शन की आकांक्षा की हो, धर्म के फल में संदेह किया हो, पर-पाखंड की प्रशंसा की हो, पर-पाखंड का परिचय किया हो, मेरे सम्यक्त्व-रूप रत्न पर मिथ्यात्व रूपी रज-मैल लगा हो तथा कोई अतिचार लगा हो, तो दिवस संबंधी तरस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

मूल शब्द	अर्थ
जावज्जीवं	यावत् जीवन (जीवन-पर्यन्त)
देवो	मेरे
अरिहंतो	अरिहंत
मह	देव है,
सुसाहुणो	सुसाधु (निर्ग्रथ)
गुरुणो	गुरु हैं (तथा)
जिणपण्णत्तं	जिन (अरिहंत) प्ररूपित
तत्तं	तत्त्व (धर्म) हैं ;
इअ	इस प्रकार

मए	मैंने
सम्मत्तं	सम्यक्त्व को
गहियं	ग्रहण किया है।
परमत्थसंथवो	परमार्थ (नव तत्त्व) का परिचय (ज्ञान)
वा	एवं
सुदिट्ट परमत्थ सेवणा	परमार्थ-ज्ञाता की सेवा
वा वि	एवं
वावण्ण-	सम्यक्त्व-भ्रष्ट और
कुदंसण-वज्जणा	कुदर्शनी (मिथ्या दृष्टि) की संगति का त्याग
य	ये (चारों कार्य)
सम्मत्त सदहणा	सम्यक्त्व के श्रद्धान (रक्षक) हैं
इअ सम्मत्तस्स	इस प्रकार सम्यक्त्व के
पंच	पाँच
अइयारा	अतिचार
पेयाला	प्रधान (है, जो)
जाणियव्वा	जानने योग्य (तो हैं, किंतु)
न सामायरियव्वा	आचरण करने योग्य नहीं हैं।
तं जहा-	वे इस प्रकार हैं-
संका	जिन वचन में शंका (की हो)
कंखा	परदर्शन की आकांक्षा (की हो)
वितिगच्छा	धर्म-फल में संदेह (किया हो)
परपासंड-पसंसा	पर पाखंड की प्रशंसा (की हो)
परपासंड-संथवो	पर पाखंड का परिचय (किया हो)
जो मे	जो मैंने
देवसिओ	दिवस संबंधी (इन)
अइयारो	अतिचारों (का सेवन)
कओ	किया हो (तो)

तस्स
मि
दुक्कडं
मिच्छा

तत्संबंधी
मेरा
दुष्कृत (पाप)
मिथ्या (निष्फल) हो

व्रतातिचार

1. पहले स्थूल प्राणातिपात विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - रोषवश गाढ़ा बंधन बांधा हो, गाढ़ा घाव घाला हो, अवयव (चाम आदि) का छेद किया हो, अधिक भार भरा हो, भात-पानी का विच्छेद किया हो (खाने-पीने में रुकावट डाली हो); इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो दिवस संबंधी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

2. दूसरे स्थूल मृषावाद विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - सहसाकार से (बिना सोचे-समझे) किसी के प्रति कूड़ा आल (झूठा दोष) दिया हो, एकांत में गुप्त बातचीत (आदि) करते हुए व्यक्तियों पर झूठा आरोप लगाया हो, स्त्री-पुरुष का मर्म (गुप्त बातचीत) प्रकाशित किया हो, मृषा (झूठा) उपदेश दिया हो, कूड़ा (झूठे) लेख (आदि) लिखा हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो दिवस संबंधी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

3. तीसरे स्थूल अदत्तादान विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - चोर की चुराई वस्तु ली हो, चोर को सहायता (आदि) दी हो, राज्य-विरुद्ध काम किया हो, कूड़ा (खोटा) तोल कूड़ा माप किया हो, वस्तु में भेल-संभेल (आदि) की हो;

इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो दिवस संबंधी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

4. चौथे रथूल-स्वदार संतोष, परदार (स्त्रियां-“स्वपति संतोष, पर-पुरुष” बोले) विवर्जन-रूप-मैथुन विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - इत्तरिय परिग्गहिया से गमन किया हो, अपरिग्गहिया से गमन किया हो, अनंग क्रीड़ा की हो, पराये का विवाह-नाता कराया हो, कामभोग की तीव्र अभिलाषा की हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो दिवस संबंधी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

5. पाँचवे रथूल परिव्रह परिमाण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - क्षेत्र (खेत), वत्थु (मकानादि) का परिमाण का अतिक्रमण किया हो, हिरण्य (चाँदी), सुवर्ण (सोना) का परिमाण अतिक्रमण किया हो, धन-धान्य का परिमाण अतिक्रमण किया हो, दोपद (दास-दासी), चौपद (हाथी-घोड़ा आदि) का परिमाण अतिक्रमण किया हो, कुप्य सोना-चाँदी के सिवाय अन्य धातु के परिमाण का अतिक्रमण किया हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो दिवस संबंधी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

6. छठे दिशि व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - ऊँची दिशा के परिमाण का अतिक्रमण किया हो, नीची दिशा के परिमाण का अतिक्रमण किया हो, तिरछी दिशा के परिमाण का अतिक्रमण किया हो, क्षेत्र बढ़ाया हो, क्षेत्र-परिमाण के भूल जाने से पंथ का सन्देह पड़ने पर आगे चला हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो देवसिय संबंधी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

7. सातवाँ उपभोग-परिभोग परिमाण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - (भोजन की अपेक्षा से) पच्चक्खाण (मर्यादा) के उपरांत सचित्त का आहार किया हो, सचित्त प्रतिबद्ध (सचित्त से लगे हुए अचित्त) का आहार किया हो, अपक्व (अचित्त न बने हुए) का आहार किया हो, दुपक्व (सड़े-गले) का आहार किया हो, तुच्छौषधि (अल्पसार वाले) का आहार किया हो; तथा (कर्म की अपेक्षा से) पन्द्रह कर्मादान जो जानने योग्य हैं किन्तु आचरण करने योग्य नहीं हैं, उनके विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - इंगालकम्मे, वणकम्मे, साड़ीकम्मे, भाड़ीकम्मे, फोड़ीकम्मे, दंतवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, जंतपीलणकम्मे, निलंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदह तलाय-सोसणया, असईजण पोसणया जो मे देवसिओ अइयारो कओ तरस मिच्छामि दुक्कडं।

8. आठवें अनर्थदण्ड विरमण व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - कामविकार पैदा करने वाली (या बढ़ाने वाली) कथा की हो, भंड कुचेष्टा की हो, मुखरी (निरर्थक) वचन बोला हो, अधिकरण (हिंसा के साधन) जोड़ रखा हो, उपभोग-परिभोग (के द्रव्य) अधिक बढ़ाया हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो देवसिय संबंधी तरस मिच्छामि दुक्कडं।

9. नवें सामायिक व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - मन के अशुभ योग प्रवर्ताये हों, वचन के अशुभ योग प्रवर्ताये हों, काया के अशुभ योग प्रवर्ताये हों, सामायिक की स्मृति (कब ली ? आदि) न की हो, समय पूर्ण हुए बिना सामायिक पारी हो; इन

अतिचार में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो देवसिय संबंधी तरस्स मिच्छामि दुक्कडं।

10. दसवें देशावगासिक व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - नियमित सीमा के बाहर की वस्तु मँगवाई हो, (नौकर आदि से) भिजवाई हो, (खांसी आदि) शब्द करके चेताया हो, रूप (या अंगुली आदि) दिखाकर अपने भाव प्रकट किये हो, कंकर आदि (बाहर) फेंककर दूसरों को बुलाया हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो देवसिय संबंधी तरस्स मिच्छामि दुक्कडं।

11. ग्यारहवें प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - पौषध में शय्यासंधारा न देखा (प्रतिलेखना) हो या अच्छी तरह से न देखा हो, पूंजा न हो या अच्छी तरह से न पूंजा हो, उच्चार प्रस्रवण की भूमि को न देखा हो या अच्छी तरह से न देखा हो, पूंजी न हो या अच्छी तरह से न पूंजी हो, उपवासयुक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन न किया हो, इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो देवसिय संबंधी तरस्स मिच्छामि दुक्कडं।

12. बारहवें अतिथि - संविभावा व्रत के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - अचित्त (अशनादि) वस्तु सचित्त, (जलादि) पर रखी हो, अचित्त वस्तु सचित्त से ढँकी हो, साधुओं को भिक्षा देने का समय टाल दिया हो, स्वयं सूझता (शुद्ध) होते हुए भी दूसरों से दान दिलाया हो, मत्सर (ईर्ष्या) भाव से दान दिया हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो देवसिय संबंधी तरस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तप-अतिचार

संलेखना के विषय में जो कोई अतिचार लगा हो, तो आलोउं - इस (मनुष्य) लोक के चक्रवर्ती आदि के सुखों की इच्छा की हो, पर (मनुष्येतर देव) लोक के इन्द्रादि के सुखों की इच्छा की हो, (कीर्ति आदि देख कर) बहुत काल जीने की इच्छा की हो, (अपयश से घबरा कर) शीघ्र मरने की इच्छा की हो; काम भोगों की तीव्र इच्छा की हो; इन अतिचारों में से मुझे जो कोई अतिचार लगा हो, तो देवसिय संबंधी तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

अतिचारों का समुच्चय-पाठ

इस प्रकार 14 ज्ञान के, 5 दर्शन (सम्यक्त्व) के, 60 बारह व्रतों के, 15 कर्मादानों के (कुल 75 चरित्र के) और 5 संलेखना (तप) के; इन 99 अतिचारों में किसी अतिचार का जानते-अजानते, मन-वचन-काय से सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, तो अनंत सिद्ध भगवंतों की साक्षी से तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

पाप-प्रतिक्रमण पाठ

अठारह पाप-स्थान आलोउं - प्राणातिपात (हिंसा), मृषावाद (झूठ), अदत्तादान (चोरी), मैथुन (अब्रह्मचर्य), परिग्रह, क्रोध, मान, माया (कपट), लोभ, राग (प्रेम या दोस्ती), द्वेष (वैर), कलह (क्लेश या झगड़ा), अभ्याख्यान (कलंक लगाना), पैशुन्य (चुगली खाना), परपरिवाद (दूसरों की निंदा करना), रति-अरति (राजी होना एवं नाराज होना), माया मृषावाद (कपट सहित झूठ बोलना), मिथ्यादर्शन शल्य (अयथार्थ विश्वास रखना)। इन अठारह प्रकार के पापों में से

किसी का सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए को भला जाना हो,
तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

(विधि : इच्छामि पडिक्कमिउं का पाठ बोलें)

तस्स सब्बस्स का पाठ

तस्स सब्बस्स देवसियस्स अइयारस्स दुब्भासिय दुच्चिंतिय-
दुच्चिद्वियस्स आलयंतो पडिक्कमामि।

मूल शब्द	अर्थ
तस्स	उन
सब्बस्स	सभी
दुब्भासिय	दुष्ट भाषण रूप
दुच्चिंतिय	दुष्ट चिन्तन रूप (एवं)
दुच्चिद्वियस्स	दुष्ट काय-प्रवृत्ति रूप
देवसियस्स	दिवस संबंधी
अइयारस्स	अतिचारों की
आलयंतो	आलोचना करता हुआ
पडिक्कमामि	(उनका) प्रतिक्रमण करता हूँ।

विधि : अब तिक्खुत्तो के पाठ से विधियुक्त वंदना करके "श्रावक
सूत्र की आज्ञा है" ऐसा कहकर आसन पर बैठकर दाहिना घुटना ऊँचा
रखकर "नवकार मंत्र", "करेमि भंते" बोलकर चत्तारि मंगलं का पाठ
बोलना।

चत्तारि मंगलं का पाठ

(मंगल सूत्र)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,

केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा । चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंत्ते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

अरिहंतों का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवली प्ररूपित दया धर्म का शरणा । चार शरणा दुःख हरणा और न शरणा कोय जो भव्य प्राणी आदरे तो अक्षय अमर पद होय ।

मूल शब्द	अर्थ
चत्तारि	चार
मंगलं	मंगल (विघ्न-नाशक) हैं ।
अरिहंता मंगलं	अरिहंत मंगल हैं
सिद्धा मंगलं	सिद्ध मंगल हैं
साहू मंगलं	साधु मंगल हैं
केवलिपण्णत्तो-धम्मो मंगलं	केवली (अरिहंत) द्वारा प्ररूपित (जिन) धर्म मंगल है । (क्योंकि ये)
चत्तारि	चार
लोगुत्तमा	लोक में उत्तम हैं
अरिहंता लोगुत्तमा	अरिहंत लोकोत्तम हैं
सिद्धा लोगुत्तमा	सिद्ध लोकोत्तम हैं
साहू लोगुत्तमा	साधु लोकोत्तम हैं
केवलिपण्णत्तो-धम्मो लोगुत्तमा	केवली प्ररूपित धर्म लोकोत्तम है
चत्तारि	(अतः मैं इन) चारों की
सरणं	शरण को
पवज्जामि	ग्रहण करता हूँ

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहू सरणं पवज्जामि
केवलिपण्णत्तं-धम्मं सरणं पवज्जामि

अरिहंतों की शरण ग्रहण करता हूँ
सिद्धों की शरण ग्रहण करता हूँ
साधुओं की शरण ग्रहण करता हूँ
केवली प्ररूपित धर्म की शरण
ग्रहण करता हूँ

विधि : इच्छामि पडिक्कमिउं, इच्छाकारेणं, आगमे तिविहे, अरिहंतो महदेवो का पाठ बोलें, फिर बारह व्रत अतिचार सहित बोलें।

बारह व्रतों के अतिचार सहित पाठ

1. स्थूल-प्राणातिपात-विरमण-व्रत

पहला अणुव्रत "थूलाओ पाणाइवायाओ वेरमणं", त्रस जीव बेइंदिय तेइंदिय चउरिंदिय पंचिदिय, (इनको), जान के, पहचान के, संकल्प करके, उसमें सगे-संबंधी तथा स्व-शरीर के भीतर पीड़ाकारी एवं सापराधी को छोड़, निरपराधी को, आकुट्टी की बुद्धि से हनने का पच्चक्खाण (करता हूँ)। जावज्जीवाए दुविहं-तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि; मणसा, वयसा, कायसा; ऐसे पहले स्थूल प्राणातिपात-विरमण-व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरिव्वा, तं जहा ते आलोउं - बंधे, वहे, छविच्छेए, अइभारे, भत्तपाण-विच्छेए; जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

अणुव्रत

बहुत-सी छूटों के साथ लिया जाने वाला, अतएव महाव्रत की अपेक्षा छोटा व्रत

थुलाओ पाणाइवायाओ

स्थूल प्राणातिपात (जीव हिंसा)

वेरमणं

विरत (निवृत्त) होना

आकुट्टी

मार डालने की बुद्धि

2. स्थूल-मृषावाद-विरमण-व्रत

दूसरा अणुव्रत "थूलाओ मुसावायाओ वेरमणं" कन्नालीए, गोवालीए, भोमालीए, णासावहारो, कूडसक्खिज्जे, इत्यादिक मोटा झूठ बोलने का पच्चक्खाण (करता हूँ); जावज्जीवाए, दुविहं-तिविहेणं न करेमि, न कारवेमि; मणसा, वयसा, कायसा; ऐसे दूसरे स्थूल-मृषावाद-विरमण-व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-सहसब्भक्खाणे, रहस्सब्भक्खाणे, सदार-मंतभेए (नोट : स्त्रियाँ यहाँ पर "स-भत्तार-मंतभेए" बोलें), मोसोवएसे, कूडलेहकरणे; जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

मुसावायाओ	मृषावाद (झूठ) से
कन्नालीए	कन्या (वर आदि मनुष्य) सम्बन्धी
गोवालीए	गाय (भैंस आदि पशु) सम्बन्धी
भोमालीए	भूमि (धन आदि शेष द्रव्य) सम्बन्धी
णासावहारो	धरोहर-दवाने सम्बन्धी
कूडसक्खिज्जे	झूठी साक्षी (गवाही) सम्बन्धी

3. स्थूल-अदत्तादान-विरमण-व्रत

तीसरा अणुव्रत "थूलाओ अदिण्णा-दाणाओ वेरमणं", खात खनकर, गाँठ खोलकर, ताले पर कूँची लगाकर, मार्ग में चलते को लूटकर, पड़ी हुई धणियाती मोटी वस्तु जानकर लेना, इत्यादिक मोटा अदत्तादान का पच्चक्खाण (करता हूँ); सगे सम्बन्धी, व्यापार सम्बन्धी तथा पड़ी निर्भ्रमी वस्तु के उपरांत अदत्तादान का पच्चक्खाण (करता हूँ); जावज्जीवाए दुविहं-तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि; मणसा,

वयसा, कायसा; ऐसे तीसरे स्थूल-अदत्तादान-विरमण-व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-तेनाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कम्मे, कूड-तुल्ल-कूडमाणे, तप्पडिरुवग-ववहारे; जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

कठिन शब्दों के अर्थ :

अदिण्णा-दाणाओ	अदत्तादान (चोरी) से
घणियाती	किसी के अधिकार की
निर्भमी	शंका रहित

4. स्थूल-मैथुन-विरमण-व्रत

चौथा अणुव्रत “थूलाओ मेहुणाओ वेरमणं”, सदार सन्तोसिए, (स्त्रियों के लिए “सभत्तार सन्तोसिए”) अवसेस (सव्वं) मेहुण-विहिं पच्चक्खामि, जावज्जीवाए, देव-देवी सम्बन्धी दुविहं-तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि; मणसा, वयसा, कायसा; तथा मनुष्य-तिर्यच सम्बन्धी एगविहं एगविहेणं न करेमि, कायसा; ऐसे चौथे स्थूल-मैथुन-विरमण-व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं - इत्तरिय-परिग्गहिया-गमणे, अपरिग्गहिया-गमणे अनंगकीडा, पर-विवाह-करणे, कामभोग-तिव्वाभिलासे; जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं ।

कठिन शब्दों के अर्थ :

मेहुणाओ	मैथुन (अब्रह्मचर्य) से
सदार संतोसिए	अपनी विवाहिता स्त्री में ही सन्तोष रखता हुआ
अवसेसमेहुण-विहिं	अन्य सब प्रकार के मैथुन-सेवन का

5. स्थूल-परिग्रह-विरमण-व्रत

पाँचवा अणुव्रत "थूलाओ परिग्गहाओ वेरमणं", खेत-वत्थु का यथा परिमाण, हिरण्य-सुवर्ण का यथा परिमाण, दुपय-चउप्पय का यथा परिमाण, धन-धान्य का यथा परिमाण, कुविय धातु का यथा परिमाण; इस प्रकार जो परिमाण किया है, उसके उपरांत अपना करके परिग्रह रखने का पच्चक्खाण (करता हूँ); जावज्जीवाए, एगविहं-तिविहेणं, न करेमि, मणसा-वयसा-कायसा; ऐसे पाँचवें स्थूल-परिग्रह-विरमाण-व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-खेतवत्थुप्पमाणाइक्कमे, हिरण्य-सुवर्णप्पमाणाइक्कमे, धणधाण्य-प्पमाणाइक्कमे, दुपय-चउप्पयप्पमाणाइक्कमे, कुवियप्पमाणाइक्कमे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

परिग्गहाओ	परिग्रह (संग्रह तथा मूर्च्छा) से
खेत	क्षेत्र (खुली भूमि-खेत आदि)
वत्थु	वास्तु (ढकी भूमि-घर आदि)
हिरण्य-सुवर्ण	चांदी-सोना आदि
दुपय	दो पैर वाले (मनुष्य पक्षी आदि)
चउप्पय	चार पैर वाले (गाय, भैंस, बैल आदि)
धण	रोकड़ पूंजी (मुद्रा-हुंडी आदि)
धाण्य	गेहूं, बाजरा, ईख आदि
कुविय	सोना-चांदी के सिवाय अन्य पीतल, लोहा आदि धातुओं एवं उनसे बने पात्र आदि

6. दिशा-परिमाण-व्रत

छठा दिशाव्रत उड्ढ दिशा का यथा परिमाण, अहोदिशा का

यथा परिमाण, तिरियदिशा का यथा परिमाण; इस प्रकार जो परिमाण किया है उसके उपरांत स्वेच्छा-काया से आगे जाकर पाँच आस्रव-सेवन का पच्यक्खान (करता हूँ); जावज्जीवाए एगविहं तिविहेणं, न करेमि, मणसा-वयसा-कायसा, ऐसे छठे दिशाव्रत के पंच अइयारा, जाणियव्वा, न समायरियव्वा तं जहा ते आलोउं-उड्ढ दिसिप्पमाणाइक्कमे, अहो दिसिप्पमाणाइक्कमे, तिरिय दिसिप्पमाणाइक्कमे, खित्तवुद्धी, सइ-अंतरद्धा, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तरस मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

उड्ढ	ऊर्ध्व (ऊंची)
अहो	अधो (नीची)
तिरिय	तिर्यग् (तिरछी)

7. उपभोग-परिभोग-परिमाण-व्रत

सातवाँ व्रत उपभोग-परिभोग-विहिं पच्यक्खायमाणे 1. उल्लणिया-विहि 2. दंतण-विहि 3. फल-विहि 4. अब्भंगण-विहि 5. उव्वट्टण-विहि 6. मज्जण-विहि 7. वत्थ-विहि 8. विलेवण-विहि 9. पुप्फ-विहि 10. आभरण-विहि 11. धूव-विहि 12. पेज्ज-विहि 13. भक्खण-विहि 14. ओदण-विहि 15. सूप-विहि 16. विगय-विहि 17. साग-विहि 18. महुर-विहि 19. जीमण-विहि 20. पाणीय-विहि 21. मुखवास-विहि 22. वाहण-विहि 23. उवाणह-विहि 24. सयण-विहि 25. सचित्त-विहि 26. दव्व-विहि; इन छब्बीस बोलों का यथा परिमाण किया है, उसके उपरांत उपभोग-परिभोग-वस्तुओं को भोग-निमित्त से भोगने का पच्यक्खाण (करता हूँ), जावज्जीवाए, एगविहं-तिविहेणं, न करेमि, मणसा-वयसा-कायसा, ऐसा सातवाँ उपभोग-परिभोग दुविहे पण्णत्ते तं जहा-भोयणाओ

य, कम्मओ य, भोयणाओ य, समणोवासएणं पंच अइयारा, जाणियव्वा,
न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-सचित्ताहारे, सचित्त-पडिबद्धाहारे,
अप्पउलि-ओसहि भक्खणया; दुप्पउलि ओसहि भक्खणया, तुच्छोसहि
भक्खणया कम्मओणं समणोवासएणं पण्णरस कम्मदाणाइं, जाणियव्वाइं,
न समायरियव्वाइं तं जहा ते आलोउं-1. इंगालकम्मे 2. वणकम्मे
3. साडीकम्मे 4. भाडीकम्मे 5. फोडीकम्मे 6. दंतवाणिज्जे 7. लक्खवाणिज्जे
8. रसवाणिज्जे 9. केसविणाज्जे 10. विसवाणिज्जे 11. जंत-पीलण-
कम्मे 12. निल्लंछणकम्मे 13. दवग्गि-दावणया 14. सर-दह-तलाय-
सोसणया 15. असई-जण-पोसणया, जो मे देवसिओ अइयारो कओ,
तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

उपभोग

उपभोग (जो ^{अनेक} एक बार भोगा जा सके)

परिभोग

परिभोग (जो ^{अनेक} बार भोगा जा सके)

विहिं

विधि का ^{एक}

पच्चक्खायमाणे

प्रत्याख्यान करते हुए

उल्लणियाविहि

(पोंछने के) अंगोछे की विधि (जाति)

दंतण-विहि

दंतौन की विधि

फल-विहि

(केश-प्रक्षालनोपयोगी) फल की विधि

अब्भंगण-विहि

(मालिश के लिए) तैलादि की विधि

उब्बट्टण-विहि

उबटन (पीठी) आदि की विधि

मज्जण-विहि

स्नान की विधि

वत्थ-विहि

(पहनने योग्य) वस्त्र की विधि

विलेवण-विहि

विलेपन (योग्य चंदन आदि) की विधि

पुप्फ-विहि

फूल (फूलमाला आदि) की विधि

आभरण-विहि

(अंगूठी आदि) आभरण की विधि

धूव-विहि	(अगर-तगर आदि) धूप की विधि
पेज्ज-विहि	(दूध आदि) पेय की विधि
भक्खण-विहि	(घेवर आदि) मिठाई की विधि
ओदण-विहि	(रांधे हुए) चावल आदि की विधि
सूप-विहि	(मूंग, चना आदि) सूप (दाल) की विधि
विगय-विहि	(दूध-दही आदि) विगय की विधि
साग-विहि	(सूखे या हरे) शाक की विधि
महुर-विहि	(सूखे-हरे) मधुर (फल) की विधि
जीमण-विहि	(रोटी-पूरी आदि) जीमने की विधि
पाणीय-विहि	(पीने योग्य) पानी की विधि
मुखवास-विहि	(लॉग, सुपारी आदि) मुखवास की विधि
वाहण-विहि	(घोड़ा, मोटर आदि) वाहन की विधि
उवाणह-विहि	(जूते-मौजे आदि) उपानह की विधि
सयण-विहि	(सोने योग्य) वस्त्र, पलंग आदि की विधि
सचित्त-विहि	(नमक आदि) सचित्त वस्तुओं की विधि
दब्ब-विहि	(इनके अतिरिक्त) पदार्थों की विधि
दुविहे पण्णत्ते	दो प्रकार का कहा गया है
भोयणाओ	भोजन की अपेक्षा से (और)
कम्मओ	कर्म की अपेक्षा से
समणोवासएणं	श्रावक के (को)
पण्णरस कम्मदाणाइं	पन्द्रह कर्मादान (जो)
इंगालकम्मे	अंगार-कर्म (कोयले बनाना और बेचना)
वणकम्मे	वन-कर्म (वृक्षों को काटना और बेचना)
साडीकम्मे	शाकटिक कर्म (वाहन सहित गाड़ी तांगा आदि बनाना व बेचना)
भाडीकम्मे	भाटी कर्म (भाड़े के काम करना)
फोडीकम्मे	स्फोटक कर्म (सुरंग आदि से जमीन खोदना,

दंतवाणिज्जे	खान से निकले पत्थर, मिट्टी, धातु आदि बेचना)
लखवाणिज्जे	दंत-वाणिज्य (हाथी-दांत, शंख, चर्म आदि खरीदने-बेचने का काम करना)
रसवाणिज्जे	लाक्ष-वाणिज्य (लाख का व्यापार करना)
विसवाणिज्जे	रस-वाणिज्य (मदिरा आदि रस का व्यापार करना)
केसवाणिज्जे	विष-वाणिज्य (विष का व्यापार करना)
जंत-पीलण-कम्मे	केश-वाणिज्य (केश वाले प्राणियों का व्यापार करना)
निल्लंछणकम्मे	यंत्र-पीलन-कर्म (यन्त्रों से पीलने का काम करना)
दवग्गि-दावणया	निर्लाछन-कर्म (बैल, घोड़े आदि को नपुंसक बनाने का काम करना)
सर-दह-तलाय-सोसणया	दावाग्नि-दापनता (सफाई के लिए खेत-जंगल आदि में आग लगाना)
असई-जण-पोसणया	सर-द्रह-तडाग-शोषणता (खेती के लिए सरोवर, तलाव आदि को सुखाने का काम करना)
	असती-जन-पोषणता (वेश्या आदि का पोषण करना)

8. अनर्थदंड-विरमण-व्रत

आठवाँ "अणद्धादण्ड-विरमण-व्रत", चउब्बिहे अणद्धादंडे पण्णते, तं जहा 1. अवज्झाणायरिए 2. पमायायरिए 3. हिंसप्पयाणे 4. पावकम्मोवएसे एवं आठवाँ अनर्थदंड-सेवन का पच्चक्खाण, जिसमें आठ आगार 1. आए वा 2. राए वा 3. नाए वा 4. परिवारे वा 5. देवे वा 6. नागे वा 7. भूए वा 8. जक्खे वा, एत्तिएहिं आगारेहिं अन्नत्थ,

जावज्जीवाए, दुविहं-तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा-वयसा-कायसा; ऐसे आठवें अनर्थदंड-विरमण-व्रत के पंच अइयारा; जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-कंदप्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोग-परिभोग-अइरित्ते, जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

अणद्धादण्ड	अनर्थदंड
चउव्विहे अणद्धादंडे	चार प्रकार का (अनर्थ दंड)
पण्णत्ते	कहा गया है।
अवज्झाणायरिए	अप (आर्त-रौद्र) ध्यान रूप
पमायायरिए	प्रमाद रूप
हिसप्पयाणे	हिंसा के साधन (शस्त्रास्त्र, साहित्य आदि)
	किसी को देना
पावकम्मोवएसे	पाप-कर्म का उपदेश रूप
आए वा	अपने (स्वयं अकेले के) लिए
राए वा	राजा (आदि शासकों) के लिए
नाए वा	ज्ञाति (जाति-कुल) के लिए
परिवारे वा	परिवार (सेवक, भागीदार आदि) के लिए
देवे वा	वैमानिक-ज्योतिषी देवों के लिए
नागे वा	भवनपति देवों के लिए
भूए वा	भूत आदि के लिए
जक्खे वा	यक्ष आदि व्यंतर देवों के लिए
एत्तिएहिं	इतने
आगारेहिं	आगारों (छूटों) से
अन्नत्थ	अन्यत्र (अवशिष्ट अनर्थदंड का पच्चक्खाण)

9. सामायिक व्रत

नवमाँ "सामायिक व्रत" सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं-तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा-वयसा-कायसा; ऐसी मेरी श्रद्धना प्ररूपणा तो है, सामायिक का अवसर आये, सामायिक करूँ तब फरसना (पालन) करके शुद्ध (निर्मल) होऊँ; ऐसे नवमें सामायिक व्रत के पंच अइयारा, जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-मण-दुप्पणिहाणे, वय-दुप्पणिहाणे, काय-दुप्पणिहाणे, सामाइयस्स सइअकरणया, सामाइयस्स अणवट्टियस्स-करणया; जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

10. देशावकाशिक व्रत

दसवाँ "देशावगासिक व्रत" दिन प्रति प्रभात से प्रारम्भ करके पूर्वादिक छहों दिशा में जितनी भूमिका की मर्यादा रखी है, उसके उपरांत आगे जाकर पाँच आस्रव-द्वार सेवन का पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, दुविहं-तिविहेणं, न करेमि, न कारवेमि, मणसा-वयसा-कायसा एवम् जितनी भूमिका की मर्यादा रखी है, उसमें जो द्रव्यादि की मर्यादा की है, उसके उपरांत उपभोग-परिभोग-निमित्त से भोग भोगने का पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं पज्जुवासामि, एगविहं-तिविहेणं, न करेमि, मणसा-वयसा-कायसा; ऐसे दसवें देशावगासिक व्रत के पंच अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं - आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्धाणुवाए, रूवाणुवाए, बहिया-पुगल-पक्खेवे; जो मे देवसिओ अइयारो कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

अहोरत्तं

दिन-रात के लिए

दिवसं

पञ्जुवासामि

दिन-भर के लिए

सेवन (ग्रहण) करता हूँ

11. प्रतिपूर्ण पौषध-व्रत

ग्यारहवाँ "पडिपुण्ण-पौषध-व्रत", असणं-पाणं-खाइमं-साइमं का पच्चक्खाण, अबंभ-सेवन का पच्चक्खाण, अमुक मणि-सुवण्ण का पच्चक्खाण, माला-वण्णग-विलेवण का पच्चक्खाण, सत्थ-मुसलादिक-सावज्ज-जोग-सेवन का पच्चक्खाण, जाव अहोरत्तं पञ्जुवासामि; दुविहं-तिविहेणं न करेमि न कारवेमि, मणसा-वयसा-कायसा; ऐसी मेरी श्रद्धना-प्ररूपणा तो है, पौषध का अवसर आये, पौषध करूँ, तब फरसना करके शुद्ध होऊँ, ऐसे ग्यारहवें प्रतिपूर्ण पौषध-व्रत के पंच अइयारा, जाणियव्वा; न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं - अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, सेज्जासंथारए, अप्पमज्जिय, दुप्पमज्जिय, सेज्जासंथारए, अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय, उच्चारपासवण-भूमि, अप्पमज्जिय, दुप्पमज्जिय, उच्चारपासवण-भूमि, पोसहरस्स सम्मं अणणुपालणया; जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तरस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

पडिपुण्ण	प्रतिपूर्ण
असणं	अशन (अन्नाहार और विगय आदि)
पाणं	पान (धोवन या गरम जल)
खाइमं	खाद्य (फल, मेवा, औषध आदि)
साइमं	स्वाद्य (लॉग, सुपारी आदि)
अबंभ-सेवन	मैथुन-सेवन
मणि-सुवण्ण	मणि, सोना आदि के आभूषण (पहनने)

माला	फूलमाला (पहनने)
वर्णग	सुगंधित चूर्णादि (पाउडर) के मनोहर रंग (लगाने)
विलेपण	चन्दनादि के विलेपन (करने)
सत्थ	शस्त्र (तलवार आदि) एवं
मुसलादि	मूसल आदि (औजार) को काम में लेने रूप
सावज्ज-जोग-सेवन	सावध योग-सेवन (पापकारी वृत्ति)

12. अतिथि-संविभाग-व्रत

बारहवाँ "अतिथि-संविभाग-व्रत", समणे-निग्गंथे, फासुय-एस-णिज्जेणं, असण-पाण-खाइम-साइम-वत्थ-पडिग्गह-कंबल-पायपुच्छेणेणं, पडिहारिय पीढ-फलग-सेज्जा-संथारएणं, ओसह-भेसज्जेणं, पडिलाभेमाणे विहरामि; ऐसी मेरी श्रद्धा-प्ररूपणा तो है, साधु-साध्वी का योग मिलने पर निर्दोष दान दूँ, तब फरसना करके शुद्ध होऊँ, ऐसे बारहवें अतिथि-संविभाग-व्रत के पंच अइयारा, जाणियव्वा न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं - सचित्तनिक्खेवणया, सचित्त-पिहणया, कालाइक्कमे, परोवएसे, मच्छरियाए, जो मे देवसिओ अइयारो, कओ तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

अतिथि	साधु (जिनके आने की तिथि नियत न हो)
संविभाग-व्रत	अपने अशन आदि में से कुछ भाग देने रूप व्रत
समणे	श्रमणों (मोक्ष के लिए श्रम करने वालों) को
निग्गंथे	निर्ग्रन्थों (परिग्रह-कंचन-कामिनी के त्यागियों को)

विधि : पालखी आसन में बैठकर के बड़ी संलेखना का पाठ बोलें।

संलेखना (तप) व्रत

अह, भंते अपच्छिम-मारणंतिया-संलेहणा झूसणा आराहणा, पौषधशाला पूंजकर, उच्चार-पासवण भूमिका पडिलेहकर, गमणागमणे पडिक्कम कर, दर्भादिक संथारा संथार कर, दर्भादिक संथारा दुरूहकर, पूर्व या उत्तर (या ईशानकोण) दिशा सम्मुख पल्यंकादिक आसन से बैठकर, करयल-संपरिगगहियं, सिरसावत्तं, मत्थए अंजलिं कट्टु, एवं वयासी-नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं... जाव संपत्ताणं, ऐसे अनंत-सिद्ध भगवान को नमस्कार करके, नमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं... जाव संपाविउकामाणं, ऐसे जयवंते वर्तमान काल में महाविदेह क्षेत्र में विचरते हुए तीर्थकर भगवान को नमस्कार करके (नमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगरस्स, ऐसे) अपने धर्माचार्य जी को नमस्कार करता हूं। साधु- प्रमुख चारों तीर्थ को खमाकर, सर्व जीव-राशि को खमाकर, पहले जो व्रत आदरे हैं, उनमें जो (आज तक) अतिचार-दोष लगे हैं, वे सर्व आलोच कर, पडिक्कम कर, निंदकर, निःशल्य होकर; सब्बं पाणाइवायं पच्चक्खामि, सब्बं मुसावायं पच्चक्खामि, सब्बं अदिण्णादाणं पच्चक्खामि, सब्बं मेहुणं पच्चक्खामि, सब्बं परिगगहं पच्चक्खामि, सब्बं कोहं माणं...जाव मिच्छादंसणसल्लं पच्चक्खामि, सब्बं अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि जावज्जीवाए तिविहं-तिविहेणं, न करेमि न कारवेमि-करंतं पि अन्नं न समणुजाणामि मणसा, वयसा, कायसा; ऐसे अठारह पाप पच्चक्ख कर, सब्बं असणं-पाणं-खाइमं-साइमं चउब्बिहं पि आहारं पच्चक्खामि; जावज्जीवाए ऐसे चारों आहार पच्चक्ख कर, जं पियं इमं सरीरं, इट्ठं-कंतं-पियं-मणुण्णं-मणामं-धिज्जं-विसासियं-संमयं-अणुमयं-बहुमयं-भंड-करंडगस-माणं-रयणकरं डगभूयं,

माणं सीयं, माणं उण्हं, माणं खुहा, माणं पिवासा, माणं वाला, माणं चोरा, माणं दंसमसगा, माणं वाइयं-पित्तियं-कफ्फियं, संभीमं सण्णिवाइयं, विविहा रोगायंका-परीसहा-उवसग्गा-फासाफुसंतु; एवं पियणं चरमेहिं उरसास-निरसासेहिं वोसिरामि ति कट्टु; ऐसे शरीर को वोसिरा के कालं अणवकंखमाणे विहरामि; ऐसी मेरी श्रद्धा प्ररूपणा तो है, संलेखना का अवसर आये, संलेखना करूं, तब फरसना करके शुद्ध होऊँ। ऐसे अपच्छिम-मारणंतिय संलेहणा झूसणा आराहणाए पंच अइयारा, जाणियव्वा-न समायरियव्वा, तं जहा ते आलोउं-इहलोगा संसप्पओगे, परलोगा-संसप्पओगे, जीविया-संसप्पओगे, मरणा-संसप्पओगे, कामभोगा-संसप्पओगे, जो मे देवसिओ अइयारो कओ, तरस मिच्छामि दुक्कडं।

कठिन शब्दों के अर्थ :

अह	अव
भंते	हे भगवान् !
अपच्छिम	इस जीवन में सबसे पश्चात्
मारणतिया	मरण के निकट समय में
संलेहणा	संलेखना अर्थात् शरीर व कषाय को कृश बनाने वाले आलोचना सहित तप को
झूसणा	सेवन करना (ग्रहण करना)
आराहणा	पालन करना (निभाना)
पूज कर	(रजोहरणादि से) प्रमार्जन कर
उच्चार-पासवण भूमिका	मल-मूत्रादि को (यतना पूर्वक) परठने की भूमि
पडिलेह कर	अच्छी तरह से देखकर
गमणागमणे	जाने-आने की क्रिया का
पडिक्कम कर	प्रतिक्रमण कर

दर्भादिक
संथारा संथार कर
दर्भादिक संथारा दुरुहकर
पत्यंकादिक
करयल-संपरिग्गहियं
सिरसावत्तं
मत्थए अंजलिं कट्टु
वयासी
मम
धम्मायरियस्स
धम्मोवदेसगस्स
सव्वं पाणाइवायं
मुसावायं
अदिण्णादाणं
मेहुणं
परिग्गहं
कोहं माणं
जाव
मिच्छादंसणसत्तलं
सव्वं
अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि
तिविहं-तिविहेणं
करंतं पि अन्नं-
न समणुजाणामि
चउव्विहं पि
आहारं
जं पियं

दर्भ आदि से बना
बिछौना बिछा कर
(उस) दर्भादि से बने बिछौने पर चढ़कर
पद्मासन आदि
दोनों हाथ जोड़कर
मस्तक पर (तीन बार) प्रदक्षिणावर्त लगाकर
मस्तक पर अंजलि को स्थापन करके
कहे
मेरे
धर्माचार्य
धर्मोपदेशक (गुरु) को
संपूर्ण प्राणातिपात (हिंसा) को
मृषावाद (झूठ) का
अदत्तादान (चोरी) का
मैथुन (अब्रह्मचर्य) का
परिग्रह का
क्रोध-मान का
यावत्
मिथ्यादर्शन-शल्य का
सभी
अकरणीय (सावद्य) योगों का त्याग
तीन करण-तीन योग से
करते हुए अन्य का-
अनुमोदन भी नहीं करता हूँ
चारों ही
आहार का
और जो

इमं	(मुझे) यह शरीर
इष्टं	इष्ट था
कंठं	कांठ था
प्रियं	प्रिय था
मणुष्णं	मनोज्ञ था
मणामं	मनोरम था
धिज्जं	(मुझे जिस पर) धैर्य था
विसासियं	(मुझे जिस पर) विश्वास था
संमयं	(मुझे जो) संमत (माननीय) था
अणुमयं	अनु (दोष दिखने पर भी) मत (माननीय) था
बहुमयं	बहुमत (बहुत ही माननीय) था
भंडकरंड-समाणं	आभूषणों के करंडिये (पिटारे) तुल्य था
रयण-करंडगभूयं	रत्नों के करंडिये (पिटारे) तुल्य था
माणं सीयं	(इसको) सदीं न लगे
माणं उण्हं	गर्मीं न लगे
माणं खुहा	भूख न लगे
माणं पिवासा	प्यास न लगे
माणं वाला	सर्प (आदि) न काटे
माणं चोरा	चोर (आदि) का भय न हो
माणं दंसमसगा	मच्छर (आदि) न काटे
माणं वाइयं	वात रोग न हो
पित्तियं	पित्त रोग न हो
कफियं	कफ रोग न हो
संभीम-सण्णिवाइयं	भयंकर (त्रिदोषजन्य) संनिपात रोग न हो
विविहा-रोगायंका	(इस प्रकार) विविध रोगों का आतंक तक न हो
परीसहा-उवसग्गा	परीषह एवं उपसर्ग

फासा-फुसन्तु
इमं शरीरं
चरमेहिं
उस्सास-निस्सासेहिं
वोसिरामि
त्ति कट्टु
कालं
अणवकंखमाणे
विहरामि
आराहणाए

स्पर्श तक न करें
(ऐसे) इस शरीर को भी
अंतिम
उच्छ्वास-निःश्वास (श्वासोश्वास) तक
वोसिराता हूँ (त्यागता हूँ)
ऐसा (शरीर को त्याग) करके
काल (मृत्यु) की
आकांक्षा (इच्छा) न करता हुआ
(संयम पथ पर) विचरण करता हूँ
आराधना के विषय में

विधि : अटारह पापस्थान का पाठ एवं "इच्छामि पडिक्कमिउं जोमे" का पाठ कहकर खड़े होना तथा हाथ जोड़कर "तस्स धम्मस्स" का पाठ कहना।

तरस्स धम्मस्स का पाठ

तरस्स धम्मस्स केवलि-पणत्तरस्स अब्भुद्धिओमि आराहणाए, विरओमि विराहणाए, तिविहेण पडिक्कंतो वंदामि जिण चउवीसं।

सविधि इच्छामि खमासमणो का पाठ दो बार बोल कर पांच पदों की भाव वंदना की आज्ञा लेकर नवकार मंत्र पूरा बोलें और भाव वंदना करें।

पाँच पदों की भाव वन्दना

1. अरिहंत वंदना

पहले पद श्री अरिहंत भगवान जघन्य बीस, उत्कृष्ट एक सौ साठ तथा एक सौ सित्तर देवाधिदेव, जो उनमें वर्तमान काल में बीस विहरमानजी (तीर्थकर) महाविदेह क्षेत्र में विचरते हैं। (अरिहंत भगवान) एक हजार आठ लक्षण के धारक, चौतीस अतिशय व पैंतीस अतिशययुक्त

वाणी से विराजमान, चौंसठ इन्द्रों के वन्दनीय, पूजनीय, अठारह दोषरहित, बारह गुणसहित 1. अनन्त ज्ञान 2. अनन्त दर्शन 3. अनन्त चारित्र 4. अनन्त बलवीर्य 5. अशोक वृक्ष 6. कुसुम वृष्टि 7. दिव्य ध्वनि 8. चामर 9. स्फटिक सिंहासन 10. भा मण्डल 11. देव-दुंदुभि 12. छत्र धरावें चंवर बिंजावे पुरुषाकार-पराक्रम के धारक, सर्व द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के ज्ञाता हैं।

सवैया

नमो श्री अरिहंत, कर्मों का किया अन्त
हुआ सो केवलवन्त, करुणा-भण्डारी हैं।
अतिशय चौतीस धार, पैंतीस वाणी उच्चार
समझावे नर-नार, पर उपकारी हैं।
शरीर सुन्दराकार, सूरज सो झलकार
गुण हैं अनन्त सार, दोष-परिहारी हैं।
कहत तिलोक रिख, मन-वच-काया करी
लुली-लुली बारम्बार, वंदना हमारी है ॥

ऐसे श्री अरिहन्त देवाधिदेवजी महाराज ! आपकी दिवस-सम्बन्धी अविनय-आशातना की हो, तो हे अरिहंत भगवन् ! मेरा अपराध बार-बार क्षमा करिये। हाथ जोड़, मान मोड़, शीश नमाकर तिक्खुत्तो के पाठ से 1008 बार वन्दना नमस्कार करता हूँ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं.....मत्थएण वन्दामि।

आप मांगलिक हो, उत्तम हो, हे स्वामिन् ! हे नाथ ! आपका इस भव, पर भव, भव-भव में सदा काल शरण हो।

2. सिद्ध वंदना

दूसरे पद श्री सिद्ध भगवन् पन्द्रह भेदे अनंत सिद्ध हुए हैं : 1. तीर्थ सिद्ध 2. अतीर्थ सिद्ध 3. तीर्थकर सिद्ध 4. अतीर्थकर सिद्ध 5. स्वयंबुद्ध सिद्ध 6. प्रत्येकबुद्ध सिद्ध 7. बुद्धबोधित सिद्ध 8. स्त्रीलिंग सिद्ध 9. पुरुषलिंग सिद्ध 10. नपुसंकलिंग सिद्ध 11. स्वलिंग सिद्ध 12. अन्यलिंग सिद्ध 13. गृहस्थलिंग सिद्ध 14. एक सिद्ध 15. अनेक सिद्ध । अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अव्याबाध सुख, क्षायिक सम्यक्त्व, अटल अवगाहना, अमूर्तिकपन, अगुरु-लघु, अनन्त अकरण-वीर्य इन आठ गुणों से सहित विराजमान हैं । जहाँ (सिद्ध अवस्था में) जन्म नहीं, जरा नहीं, मरण नहीं, भय नहीं, रोग नहीं, शोक नहीं, दुःख नहीं, दारिद्र्य नहीं, कर्म नहीं, काया नहीं, मोह नहीं, माया नहीं, चाकर नहीं, टाकर नहीं, भूख नहीं, तृषा नहीं; वहाँ ज्योत में ज्योत विराजमान हैं । सकल कार्य सिद्ध करके (अर्थात्) आठ कर्म क्षय करके मोक्ष पहुँचे हैं ।

सवैया

सकल करम टाल, वश कर लियो काल
मुगति में रह्या माल, आत्मा को तारी है ।
देखत सकल भाव, हुआ है जगत राव
सदा ही क्षायिक भाव, भये अविकारी है ।
अचल अटल रूप, आवे नहीं भव-कूप
अनूप स्वरूप ऊप, ऐसे सिद्ध धारी हैं ।
कहत तिलोक रिख, बताओ ए वास प्रभु
सदा ही उगंते सूर, वन्दना हमारी है ॥

ऐसे श्री सिद्ध भगवन् ! आपकी दिवस सम्बन्धी अविनय-आशातना

की हो, तो हे सिद्ध भगवन् ! मेरा अपराध बार-बार क्षमा करिये। हाथ जोड़ वन्दना करता हूँ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं.....मत्थएण वन्दामि।
आप मांगलिक..... सदा काल शरण हो।

3. आचार्य वंदना

तीसरे पद श्री आचार्य महाराज पाँच महाव्रत पालते हैं, पाँच आचार पालते हैं, पाँच इन्द्रिय जीतते हैं, चार कषाय टालते हैं, नव वाङ् सहित शुद्ध ब्रह्मचर्य पालते हैं, पाँच समिति तीन गुप्ति शुद्ध आराधते हैं-यों छत्तीस गुण एवं आचार सम्पदा, श्रुत सम्पदा, शरीर सम्पदा, वचन सम्पदा, वाचना सम्पदा, मति सम्पदा, प्रयोगमति सम्पदा, संग्रह परिज्ञा सम्पदा-आठ सम्पदा सहित हैं।

सवैया

गुण हैं छत्तीस पूर, धारत धरम उर
मारत करम क्रूर सुमति विचारी है।
शुद्ध सो आचारवंत, सुन्दर है रूप कंत
भणिया सभी सिद्धांत, वाचणी सुप्यारी है।
अधिक मधुर वेण, कोई नहीं लोपे केण
सकल जीवों का सेण, कीरति अपारी है।
कहत तिलोक रिख, हितकारी देत सीख
ऐसे आचारज ताकूं, वन्दना हमारी है॥

ऐसे श्री आचार्य महाराज, न्याय पक्ष वाले, भद्रिक, परिणामी, परम पूज्य, कल्पनीय अचित्त वस्तु को ग्रहण करने वाले, सचित्त के

त्यागी, वैरागी महागुणी, गुणों के अनुरागी, सौभागी हैं। ऐसे श्री
आचार्य महाराज ! आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय-आशातना की हो,
तो हे आचार्य महाराज ! मेरा अपराध बार-बार क्षमा करिए। हाथ जोड़
..... वन्दना करता हूँ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं.....मत्थएण वन्दामि।
आप मांगलिक..... सदा काल शरण हो।

4. उपाध्याय वंदना

चौथे पद श्री उपाध्यायजी महाराज 11 अंग एवं 12 उपांग-इन
तेईस आगमों को आप पढ़ें, औरों को पढ़ावें तथा चरणसत्तरी,
करणसत्तरी को धारण करें-इन पच्चीस गुणों सहित; ग्यारह अंग का
पाठ अर्थ सहित जानते हैं, चौदह पूर्व के पाठक एवं निम्नोक्त बत्तीस
सूत्रों के जानकार हैं- (ग्यारह अंग) 1. आचारांग 2. सूत्रकृतांग
(सुयगडांग) 3. स्थानांग (ठाणांग) 4. समवायांग 5. भगवती
6. ज्ञाताधर्मकथांग 7. उपासकदशांग 8. अंतकृतदशांग (अंतगडदसांग)
9. अनुत्तरोपपातिक दशांग 10. प्रश्नव्याकरण 11. विपाक सूत्र (बारह
उपांग) 12. औपपातिक (उववाई) 13. राजप्रश्नीय (रायपसेणी)
14. जीवाभिगम 15. प्रज्ञापना (पन्नवणा) 16. जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति
(जम्बूद्वीवपण्णत्ती) 17. चन्द्रप्रज्ञप्ति (चंदपण्णत्ती) 18. सूर्यप्रज्ञप्ति
(सूरपण्णत्ती) 19. निरयावलिका 20. कल्पावतंसिका (कप्पवडंसिया)
21. पुष्पिका (पुष्फिया) 22. पुष्पचूलिका (पुष्फचूलिया) 23. वृष्णिदशा
(वण्णीदसा) (चार मूल सूत्र) 24. उत्तराध्ययन 25. दशवैकालिक
26. नंदी 27. अनुयोगद्वार (चार छेद सूत्र) 28. दशाश्रुतरकंध
29. बृहत्कल्प 30. व्यवहार 31. निशीथ और 32. आवश्यक सूत्र तथा

अन्य अनेक ग्रन्थों के ज्ञाता, सात नय, चार निक्षेप, निश्चय, व्यवहार, चार प्रमाण और स्वमत-परमत के ज्ञाता; मनुष्य या देवता कोई भी विवाद में जिनको छलने में समर्थ नहीं, जिन नहीं पर जिन-समान, केवली नहीं पर केवली-समान हैं।

सवैया

पढ़त ग्यारह अंग, करमां सूं करे जंग
पाखंडी को मान, भंग करण हुशियारी है।
चवदे पूरब धार, जानत आगम-सार
भवियन के सुखकार, भ्रमता निवारी है।
पढ़ावे भविक जन, स्थिर कर देत मन
तप कर तावे तन, ममता को मारी है।
कहत तिलोक रिख, ज्ञान-भानु परतिख
ऐसे उपाध्याय ताकूं, वन्दना हमारी है ॥

ऐसे श्री उपाध्याय महाराज मिथ्यात्व रूप अन्धकार के नाशक, समकित रूप उद्योत के कर्ता, धर्म से डिगते प्राणी को स्थिर करने वाले, सारए, वारए, धारए, इत्यादि अनेक गुण सहित हैं। ऐसे श्री उपाध्याय महाराज ! आपकी (दिवस सम्बन्धी) अविनय-आशातना की हो, तो हे उपाध्याय महाराज ! मेरा अपराध बार-बार क्षमा करिये। हाथ जोड़ वन्दना करता हूँ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं.....मत्थएण वन्दामि।
आप मांगलिक..... सदा काल शरण हो।

5. साधु वंदना

पाँचवे पद श्री सर्व साधु जी महाराज, अढ़ाई द्वीप-पन्द्रह क्षेत्र रूप लोक में छद्मस्थ जघन्य दो हजार करोड़, उत्कृष्ट नव हजार करोड़; केवलज्ञानी जघन्य दो करोड़, उत्कृष्ट नव करोड़ जयवन्त विचरते हैं। पाँच महाव्रत पालते हैं, पाँच इन्द्रियाँ जीतते हैं, चार कषाय टालते हैं (इस प्रकार चौदह एवं) 15. भाव-सत्य 16. करण-सत्य 17. योग-सत्य 18. क्षमावान् 19. वैराग्यवान् 20. मन-गुप्ति 21. वचन-गुप्ति 22. काय-गुप्ति 23. ज्ञान-सम्पन्नता 24. दर्शन-सम्पन्नता 25. चारित्र-सम्पन्नता 26. परीषह-सहन 27. मृत्यु के भय से मुक्त-इन सत्ताईस गुणों से युक्त, पाँच आचार पालते हैं, छह काय की रक्षा करते हैं, नव-वाड़ सहित ब्रह्मचर्य पालते हैं, बाईस परिषह जीतते हैं, तीस महामोहनीय कर्म निवारते हैं, तैंतीस आशातना टालते हैं, बयालीस दोष टालकर आहार-पानी लेते हैं, सैंतालीस दोष टालकर भोगते हैं, बावन अनाचार टालते हैं। सचित्त के त्यागी हैं, अचित्त के भोगी हैं, लोच करना, नंगे पैर चलना आदि काय-क्लेश करते हैं और मोह-ममतारहित हैं।

सवैया

आदरी संयम-भार, करणी करे अपार
समिति गुपति धार, विकथा निवारी है।
जयणा करे छह काय, सावद्य न बोले वाय
बुझाई कषाय-लाय, किरिया-भंडारी है।
ज्ञान भणें आठों याम, लेवे भगवंत नाम
धरम को करे काम, ममता कूं मारी हैं।

कहत तिलोख रिख, करमों को टाले विख
ऐसे मुनिराज ताकूं, वंदना हमारी है।

ऐसे मुनिराज महाराज ! आपकी (दिवस-संबंधी) अविनय आशातना
की हो, तो हे मुनिराज ! मेरा अपराध बार-बार क्षमा करिये। हाथ जोड़
..... वन्दना करता हूँ।

तिक्खुत्तो आयाहिणं.....मत्थएण वन्दामि।
आप मांगलिक..... सदा काल शरण हो।

सुभाषित

अनंत चौबीसी जिन नमूं, सिद्ध अनंता कोड़।
केवलज्ञानी गणधरा, वंदूं युग कर जोड़ ॥
दो करोड़ केवल धरा, विहरमान जिन बीस।
सहस्र युगल कोटि तथा, साधु नमूं निश-दीस ॥
धन-धन साधु-साध्वी, धन-धन है जिन धर्म।
जो सुमिरण-पालन करे, टूटे आठों कर्म ॥
अरिहंत सिद्ध समरुं सदा, आचारज-उपाध्याय।
साधु सकल के चरण को, वंदूं शीश नमाय ॥
अंगूठे अमृत बसे, लब्धि तणा भण्डार।
श्री गुरु गौतम समरिये, वांछित फल दातार ॥
गुरु गोविंद दोनों खड़े, किसके लागूं पाय।
बलिहारी गुरुदेव की, गोविंद दिया बताय ॥

क्षमा का पाठ

आयरिय, उवज्झाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ।
जे मे केई कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ 1 ॥

सव्वस्स समणसंघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥2॥
सव्वस्स जीवरासिस्स, भावओ धम्म-निहिय-नियचित्तो ।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि ॥3॥

शब्दार्थ :

आयरिय	आचार्य (पर)
उवज्झाए	उपाध्याय (आदि पुरुषों) पर
सीसे	शिष्य (आदि छोटों) पर
साहम्मिए	साधर्मिक पर
कुल	कुल पर
गणे अ	या गण पर
जे	जो
मे	मैंने
केई	कोई
कसाया	कषाय की हो
(ते) सव्वे	(उसके लिए मैं उन) सभी को
तिविहेणं	त्रिविध रूप (मन-वचन-काय) से
खामेमि	खमाता हूँ
सव्वस्स	(इसी प्रकार) सम्पूर्ण
समण-संघस्स	श्रमण-प्रधान (चतुर्विध) संघ रूपी
भगवओ	भगवान को
सीसे	मस्तक पर
अंजलिं	हाथ जोड़
करिअ	कर
सव्वं खमावइत्ता	सब को खमा कर (क्षमायाचना कर)
अहयं पि	मैं भी

सब्वस्स	सब को
खमामि	क्षमा प्रदान करता हूँ।
सब्वस्स	सम्पूर्ण
जीवरासिस्स	जीव राशि को
धम्म-निहिय-नियचित्तो	धर्म को चित्त में स्थिर करके (मैं)
भावओ	भाव से
सव्वं खमावइत्ता	सब को खमा कर
अहयं पि	मैं भी
सब्वस्स	सब को
खमामि	क्षमा प्रदान करता हूँ।

श्रावक-श्राविकाओं को खमाने का पाठ

अढ़ाई द्वीप, पन्द्रह क्षेत्र में श्रावक-श्राविका दान देते हैं, शील पालते हैं, तपस्या करते हैं, शुद्ध भावना भाते हैं, संवर करते हैं, सामायिक करते हैं, पौषध करते हैं, प्रतिक्रमण करते हैं, तीन मनोरथ चिंतवते हैं, श्रावक के इक्कीस गुणों से युक्त, एक व्रतधारी यावत् बारह व्रतधारी, भगवान की आज्ञा में विचरते हैं-ऐसे बड़ों से हाथ जोड़, पैरों में पड़कर क्षमा माँगता हूँ, आप क्षमा करें, आप क्षमा करने योग्य हैं और शेष सबसे समुच्चय क्षमा माँगता हूँ।

जीव-योनि को खमाने का पाठ

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेजस्काय, सात लाख वायुकाय, दस लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइंद्रिय, दो लाख तेइंद्रिय, दो लाख चतुरिंद्रिय, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यच पंचेंद्रिय, चार लाख देवता, चौदह लाख मनुष्य-ऐसे चार गति में, चौरासी लाख जीव-योनि

में सूक्ष्म-बादर, अपर्याप्त-पर्याप्त जीवों में से किसी भी जीव का हिलते-चलते, उठते-बैठते, सोते-जागते हनन किया हो, कराया हो, करते हुए का अनुमोदन किया हो, तो अठारह लाख चौबीस हजार एक सौ बीस (18,24,120) प्रकार से तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

खामेमि सब्बे जीवा का पाठ

खामेमि सब्बे जीवा, सब्बे जीवा खमंतु मे।
 मित्ती में सब्बभूएसु, वेरं मज्झं ण केणई ॥ 4 ॥
 एवमहं आलोइय-निंदिय-गरहिय-दुगुंछियं सम्मं।
 तिविहेणं पडिक्कंतो, वंदामि जिणचउब्बीसं ॥ 5 ॥

शब्दार्थ :

सब्बे जीवा	सब जीवों को
खामेमि	खमाता हूँ (क्षमायाचना करता हूँ)
सब्बे जीवा	सभी जीव
मे खमंतु	मुझे क्षमा करें (क्योंकि)
सब्बभूएसु	सभी जीवों से
मे मित्ती	मेरी मैत्री है
केणई मज्झं	किसी के साथ भी मेरा
वेरं ण	वैर नहीं है
एवमहं	इस प्रकार मैं
सम्मं	अच्छी तरह से
आलोइय	आलोचना
निंदिय	निंदा
गरहिय	गर्हा (और)
दुगुंछियं	घृणा करके

तिविहेणं
पडिककंतो
चउव्वीसं
जिण
वंदामि

मन-वचन-काय - तीनों योगों से
पापों का प्रतिक्रमण करके
चौबीसों
जिनवरों को
वन्दना करता हूँ

विधि : अठारह पापस्थान का पाठ कहना।

पाँचवाँ कायोत्सर्ग आवश्यक

तिक्खुत्तो के पाठ से 3 बार वंदना करके पाँचवें कायोत्सर्ग आवश्यक की आज्ञा लेकर।

कायोत्सर्ग-स्थापना सूत्र

देवसिय-पायच्छित्त-विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

शब्दार्थ :

देवसिय	दिवस संबंधी
पायच्छित्त	प्रायश्चित्त (स्थान, अतिचारों) की
काउस्सग्गं	कायोत्सर्ग
करेमि	करता हूँ

विधि : "नवकार मंत्र", "करेमि भंते", "इच्छामि ठामि" एवं "तस्स उत्तरी" का पाठ बोलकर कायोत्सर्ग करें, कायोत्सर्ग में देवसिय में 4 लोगस्स, राईय में 2, पक्खिय में 8 एवं चौमासी में 12, संवच्छरिय में 16 लोगस्स का ध्यान करना चाहिए। फिर कायोत्सर्ग शुद्धि पाठ बोलें। उसके पश्चात् लोगस्स का पाठ बोलें। तत्पश्चात् दो इच्छामि खमासमणो सविधि देवें सविधि वंदना करें और कहें-

हे स्वामीनाथ ! सामायिक एक, चउवीसत्थव दो, वंदना तीन, प्रतिक्रमण चार, काउस्सग्ग पाँच, ये पाँच आवश्यक पूरे हुए, छट्टे पच्चक्खाण की आज्ञा है।" ऐसा कहकर शक्ति अनुसार प्रत्याख्यान करें। मुनिराजों से पच्चक्खाण

लेवें अगर मुनिराज नहीं होवे तो ज्ञान-वृद्ध श्रावक से पच्चक्खाण ग्रहण करें।

समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ

गंटिसहियं, मुंढिसहियं, नमुक्कारसहियं, पोरसियं, साङ्गुपोरिसिं
(अपनी-अपनी इच्छा अनुसार) तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं असणं-
पाणं-खाइमं-साइमं (अपनी-अपनी धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण)
अन्नत्थणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसमोहेणं, साहुवयणेणं,
सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरह (वोसिरामि)।

शब्दार्थ :

गंटिसहियं

गांठ सहित - जब तक गांठ बंधी रखूं तब तक

मुंढिसहियं

मुट्ठी सहित - जब तक मैं मुट्ठी बंद रखूं तब तक

नमुक्कारसहियं

नमस्कार मंत्र बोल कर, सूर्योदय से लेकर एक मुहूर्त (48 मिनट)

पोरसियं

सूर्योदय से एक प्रहर का त्याग

साङ्गु पोरसियं

सूर्योदय से डेढ़ प्रहर का त्याग

अण्णत्थणाभोगेणं

बिना उपयोग के कोई वस्तु सेवन की हो

सहसागारेणं

अकस्मात् जैसे पानी बरसता हो और मुख में छींटे पड़ जावें या छाछ बिलोते समय मुँह में छींटे पड़ जावे तो मेरे आगार है।

महत्तरागारेणं

महापुरुषों और गुरुजनों की आज्ञा से नियम को भंग करना पड़े इसका मेरा आगार है।

सव्वसमाहिवत्तियागारेणं

सब प्रकार की शारीरिक, मानसिक निरोगता रहे, तब तक अर्थात् शरीर में भयंकर रोग हो जाये तो दवाई आदि का आगार है।

विधि : तद्वत् प्रमाण - "सामायिक एक, चउवीसत्थव दो, वंदना तीन, प्रतिक्रमण चार, काउरसग्ग पाँच, पच्चक्खाण छह-ये छह आवश्यक समाप्त हुए।"

अन्तिम पाठ

इन छह आवश्यक में अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार जानते-अजानते कोई दोष लगा हो तथा पाठ-उच्चारण करते समय काना, मात्रा, अनुस्वार, पद, अक्षर, ह्रस्व, दीर्घ न्यूनाधिक विपरीत कहने में आया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

मिथ्यात्व का प्रतिक्रमण, अत्रत का प्रतिक्रमण, प्रमाद का प्रतिक्रमण, कषाय का प्रतिक्रमण, अशुभ योग का प्रतिक्रमण-इन पाँच प्रतिक्रमण में से कोई प्रतिक्रमण न किया हो, तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

भूतकाल (गये काल) का प्रतिक्रमण, वर्तमान काल की सामायिक एवं भविष्य (आते) काल का पच्चक्खाण ये तीनों जो स्वयं करते हैं, दूसरों से करवाते हैं, करते हुआँ को भला मानते हैं, वे धन्य हैं।

सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा और आस्था-ये पाँच व्यवहार-सम्यक्त्व के लक्षण हैं। इनको मैं धारण करता हूँ। देव अरिहंत, गुरु निर्ग्रथ, केवलिभाषित दयामय धर्म-ये तीन तत्त्व सार हैं तथा संसार असार है। हे अरिहंत भगवन् ! आपका बताया मार्ग ही "सच्चं-सच्चं" (सत्य है)। थवथुइमंगलं।

विधि : इसके बाद नमोत्थुणं का पाठ दो बार बोलकर सन्त/सतियों को वंदना करे एवं वय के क्रम से श्रावक क्षमापना करें।

प्रतिक्रमण की विधि

धर्म-स्थान, पौषधशाला या किसी भी निरवद्य-स्थान में सर्वप्रथम विधिपूर्वक सामायिक करना। फिर आसन पर खड़े होकर पूर्व या उत्तर दिशा

की ओर मुँह करके या विराजित गुरु महाराज को तिकखुत्तो के पाठ से विधि सहित तीन बार वंदना करके, क्षेत्र-विशुद्धि हेतु चउवीसत्थव की आज्ञा लेकर "चउवीसत्थव" करना। "चउवीसत्थव" में सर्वप्रथम "इच्छाकारेणं एवं तस्स-उत्तरी" पाठ बोलकर सविधि कायोत्सर्ग करना (कायोत्सर्ग में एक लोगस्स का चिन्तन करना एवं नमस्कार-मंत्र के पाँच-पद भी मन में कहना) फिर "नमो अरिहंताणं" ऐसा प्रकट उच्चारण में कहकर कायोत्सर्ग में आर्त्तध्यान-रौद्रध्यान ध्याया हो तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं ऐसा कहना। फिर लोगस्स का पाठ कहकर दो बार "नमोत्थुणं" का पाठ बोलना।

विधिपूर्वक "तिकखुत्तो" के पाठ से तीन बार वंदना करके "देवसिय प्रतिक्रमण करने की आज्ञा है" ऐसा कहकर "इच्छामि णं भंते" का पाठ कहना। फिर विधिपूर्वक वंदना करके "पहले सामायिक आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहकर "नवकार-मंत्र", "करेमि-भंते" का पाठ "इच्छामि ठामि काउस्सग्गं" एवं "तस्स-उत्तरी" का पाठ कहते हुए विधिपूर्वक कायोत्सर्ग करना। कायोत्सर्ग में अतिचार-चिंतन हेतु "निन्यानवे अतिचार एवं अट्टारह पाप का पाठ कहते हुए "इच्छामि आलोइउं जो में का पाठ" (जं खंडियं जं विराहियं तक) एवं नवकार-मंत्र कहना। विधिपूर्वक कायोत्सर्ग पारना।

सविधि वन्दना के पश्चात् "दूसरे चउवीसत्थव आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहकर "लोगस्स" का पाठ कहना।

सविधि वन्दना के पश्चात् "तीसरे वंदन आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहकर "इच्छामि खमासमणो" का पाठ विधि-सहित दो बार कहना।

सविधि वन्दना करके "चौथे प्रतिक्रमण आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहना एवं खड़े होकर (शक्ति न हो तो बायाँ घुटना ऊँचा रखकर, बैठकर) "आगमे-तिविहे" से लेकर "संलेखना के विषय" तक पन्द्रह पाठ (99 अतिचारों का अर्थ रूप पाठ) कहना। फिर "समुच्चय-पाठ", "अठारह पाप-स्थान" का पाठ एवं "इच्छामि पडिक्कमिउं जो मे" का पाठ कहते हुए "तस्स सब्बस्स" का पाठ कहना। बाद में सविधि वन्दना करके "श्रावक सूत्र की आज्ञा है" ऐसा कहकर आसन पर बैठकर दाहिना घुटना ऊँचा

रखना एवं "नवकार-मंत्र", "करेमि-भंते", "चत्तारि-मंगलं", "इच्छामि-पडिक्कमिउं", "इच्छाकारेणं", "आगमे-तिविहे", "अरिहंतो महदेवो" एवं अतिचार सहित बारह व्रतों के पाठ कहना फिर पालकी आसन से बैठकर "बड़ी संलेखना" फिर "अठारह पाप-स्थान", "इच्छामि पडिक्कमिउं" का पाठ बोलकर खड़े होना तथा हाथ जोड़कर "तस्स धम्मस्स" का पाठ कहना फिर सविधि दो बार "इच्छामि खमासमणो देकर भाव-वन्दना की आज्ञा है" ऐसा कहते हुए पंचांग नमाकर "नवकार मंत्र" कहते हुए "पाँच पदों की वन्दना" कहना। फिर पालकी लगाकर बैठना एवं "अनंत चौबीसी" आदि दोहे, "आयरिय-उवज्जाए", "अढ़ाई द्वीप", चौरासी लाख जीव-योनि एवं "खामेमि सब्बे जीवा" का पाठ कहकर "अठारह पाप-स्थान का पाठ" कहना।

सविधि वन्दना करके "पाँचवें काउरस्सग्ग आवश्यक की आज्ञा है" ऐसा कहकर "देवसिय पायच्छित्त" का पाठ, "नवकार मंत्र", "करेमि भंते", "इच्छामि ठामि काउरस्सग्गं जो मे" एवं "तस्स-उत्तरी" का पाठ कहते हुए सविधि कायोत्सर्ग करना। कायोत्सर्ग में "लोगस्स" का पाठ एवं "नवकार मंत्र" मन में कहना। फिर सविधि कायोत्सर्ग पार कर प्रकट में "लोगस्स" का पाठ कहना एवं विधि सहित दो बार "इच्छामि खमासमणो" का पाठ कहना।

सविधि वन्दना करके "सामायिक एक, चउवीसत्थव दो, वन्दना तीन, प्रतिक्रमण चार, काउरस्सग्ग पाँच, ये पाँच आवश्यक समाप्त हुए, छट्टे पच्चक्खाण आवश्यक की आज्ञा है", ऐसा कहकर शक्ति के अनुसार "पच्चक्खाण" करना।

पच्चक्खाण के बाद "सामायिक एक, चउवीसत्थव दो, वन्दना तीन, प्रतिक्रमण चार, काउरस्सग्ग पाँच, पच्चक्खाण छह, ये छह आवश्यक समाप्त हुए" ऐसा कहकर "अन्तिम पाठ" कहते हुए विधि सहित दो बार "नमोत्थुणं" का पाठ कहना। गुरु महाराज को तीन बार सविधि वन्दना करना एवं उपस्थित स्वधर्मी भाईयों से अंतःकरण से क्षमा याचना करना।